



# अमृत



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA  
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से अमृत अंक -31 के लिए उत्कृष्ट पत्रिका का 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त करते हुए  
प्रधान महालेखाकार महोदय श्री डी. के. शेखर (मध्य में)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), तमिलनाडू  
361, अन्ना सलाई, तेयनाम्पेट चेन्नई- 600018  
अंक-32वाँ, सितंबर-2023





हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह को संबोधित करते हुए महालेखाकार महोदया



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए वरिष्ठ उपमहालेखाकार महोदया



वदना

भावों के मधु सुमन मात तेरे श्री चरणों में धर २०५६



ऐसा वर दो हे वरदायिनी मानव में नव रव भर दूँ

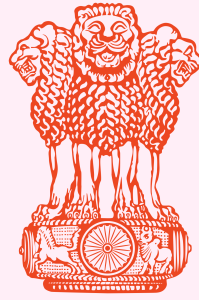


## अमृत परिवार

|                                                                                                            |                                                                                                                |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p style="text-align: center;">प्रकाशन<br/>अमृत<br/>(विभागीय हिंदी पत्रिका)</p>                            | <p style="text-align: center;">संरक्षक<br/>श्री डी. के. शेखर<br/>प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.)</p>            |
| <p style="text-align: center;">प्रकाशक<br/>कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक)<br/>तमिलनाडू, चेन्नई-600018</p> | <p style="text-align: center;">प्रधान संपादक<br/>श्रीमती सुबरंजनी एस.आर.<br/>वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)</p> |
| <p style="text-align: center;">अंक<br/>32 वाँ</p>                                                          | <p style="text-align: center;">निर्देशन<br/>एम. सुधाकरन<br/>वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)</p>                    |
| <p style="text-align: center;">प्रतियाँ<br/>50</p>                                                         | <p style="text-align: center;">संपादक<br/>डॉ. सुभाषचंद यादव<br/>हिंदी अधिकारी</p>                              |
| <p style="text-align: center;">मूल्य<br/>राजभाषा के प्रति निष्ठा</p>                                       | <p style="text-align: center;">हिंदी परिवार<br/>श्रीमती ज्योति यादव<br/>कनिष्ठ अनुवादक</p>                     |
| <p style="text-align: center;">मुद्रक<br/>जया ग्रॉफिक्स, चेन्नई</p>                                        | <p style="text-align: center;">सुश्री सबीता साव<br/>कनिष्ठ अनुवादक</p>                                         |

### टिप्पणी

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता से संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है।



सत्यमेव जयते



## संदेश

हिंदी की गृह पत्रिका अमृत का 32वाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारा प्रयास रहा है कि पत्रिका जानकारीपूर्ण हो, आकर्षक हो और हिंदी भाषा के प्रयोग में कार्मिकों की प्रतिभा प्रदर्शन का साधन बने। हमें यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि अमृत के 31वें अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से 'उत्कृष्ट पत्रिका' का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इससे जुड़े सभी पक्षों के निरंतर प्रयासों के बिना यह संभव नहीं हो सकता था। मुझे उम्मीद है कि हम भविष्य में भी उत्कृष्टता बनाए रखेंगे और गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाएँ निकालते रहेंगे।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका पिछले वर्षों की भाँति भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सफल योगदान देती रहेगी।

(डी. के. शेखर)

प्रधान महालेखाकार (ले व ह)





सत्यमेव जयते



प्रधान संपादक की कलम से...

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि अमृत पत्रिका का 32वां अंक शीघ्र ही प्रकाशित होगा। इस अवसर पर मैं प्रकाशन से जुड़े सभी लेखकों और संपादकीय कार्मिकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। अमृत पत्रिका का 31वाँ अंक जिसे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से 'उत्कृष्ट पत्रिका' का प्रथम पुरस्कार मिला, इसमें दिए अपने योगदान के लिए मैं सभी कार्मिकों को बधाई देना चाहती हूँ। मुझे यकीन है कि यह कार्मिकों को अपने कार्यालयी कामकाज में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करेगा। मुझे उम्मीद है कि पत्रिका का यह अंक हर किसी के लिए दिलचस्प होगा।

पत्रिका की निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाओं के साथ।

सुबरंजनी.एस.आर.

(सुबरंजनी एस.आर.)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)



संपादकीय...

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'अमृत' का यह 32 वें अंक को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग संबंधी विभिन्न कदम उठाए जा रहे हैं। हिंदी प्रशिक्षण और हिंदी कार्यशालाओं के अलावा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ भी समय-समय पर आयोजित की जाती हैं। अमृत एक माध्यम है हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी में लेख, कविताएँ, कहानी आदि लिखने के लिए एक मंच प्रदान करने का। हमारे उद्देश्य भी यही है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक लोग हिंदी से जुड़ें और हिन्दी में लिखने की झिझक से मुक्त हों। पत्रिका के संरक्षक प्रधान महालेखाकार महोदय एवं इस पत्रिका को योगदान प्रदान करने के लिए समस्त रचनाकारों का मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

पत्रिका की प्रस्तुति में और भी सुधार लाने हेतु आपके सुझावों का स्वागत है। धीमे ही सही पर निरंतर प्रयास सदैव कामयाबी के शिविर की तरफ ले जाते हैं, इसी का उत्कृष्ट उदाहरण है हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका अमृत। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता की पहचान है। इसे दिल से स्वीकारने की जरूरत है तभी सहज, सरल एवं संप्रेषणीय हिंदी का विस्तार संभव है। हमने हृदय से प्रयास किया है कि पत्रिका ज्ञानवर्द्धक और संवैधानिक मूल्यों की संवाहक बने। मैं इस अवसर पर अमृत पत्रिका के इस अंक के लिए आलेखों के रचनाकारों की सराहना करता हूँ और कार्यालय के कर्मचारी वर्ग में हिन्दी प्रयोग को प्रोत्साहित करने में हिन्दी कक्ष के कार्मिकों द्वारा किए गए तत्पर प्रयासों के परिणामस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से अमृत अंक-31 के लिए उत्कृष्ट पत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं सभी सहयोगियों को बधाई देता हूँ।

इस पत्रिका का यह 32वाँ अंक भी सुधी पाठकों को बहुत पसंद आएगा, ऐसी मेरी कामना है। अमृत पत्रिका के इस अंक के लिए सभी लेखकों और उन सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इसके सहयोग में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग किया। आभार सहित।

भवदीय

(डॉ. सुभाषचंद यादव)

हिन्दी अधिकारी

### अनुक्रमणिका

| क्र. सं. | रचनाएँ                                       | रचनाकार का नाम<br>(श्री/सुश्री ) | पृष्ठ<br>सं. |
|----------|----------------------------------------------|----------------------------------|--------------|
| 1.       | राम सुजस सुखमूल                              | डॉ. सुभाषचंद यादव, हिंदी अधिकारी | 7            |
| 2.       | सेवानिवृत्ति के बाद                          | जूलियट विमला बी, स.लेखाधिकारी    | 11           |
| 3.       | बच्चों में इंटरनेट और ऑनलाइन गेम्स की लत     | एम. सुधाकरन, व.लेखाधिकारी        | 14           |
| 4.       | प्रदूषण रोकने के उपाय                        | पवन कुमार सिंह, लेखाकार          | 16           |
| 5.       | <i>प्रसन्नता में ही स्वर्ग</i>               | राजीव कुमार, लेखाकार             | 18           |
| 6.       | कर्म का रहस्य                                | शैलेन्द्र कुमार, लेखाकार         | 20           |
| 7.       | महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता                | अजयनाथ त्रिपाठी, लेखाकार         | 22           |
| 8.       | मेरी माँ                                     | ज्योति यादव, क. अनुवादक          | 24           |
| 9.       | इन्तजार                                      | जी. लक्ष्मी, स.लेखाधिकारी        | 25           |
| 10.      | सूचित करने के बजाए राय कायम करता मीडिया      | सबिता साव, क.अनुवादक             | 26           |
| 11.      | जलती चिताओं के बीच जिंदगी                    | शिवजी कुमार पाण्डेय, लेखाकार     | 28           |
| 12.      | मजदूर किसान                                  | अनिल कुमार, लेखाकार              | 30           |
| 13.      | नागपट्टिनम' धर्मनिरपेक्षता की उत्कृष्ट मिशाल | विद्या जनार्दन, स.लेखाधिकारी     | 31           |
| 14.      | चोल वंश                                      | शशिकान्त कुमार लेखाकार           | 32           |
| 15.      | दोस्ती का रिश्ता                             | ज्योति यादव, क.अनुवादक           | 37           |
| 16.      | रिश्तों में वो बात नहीं रही                  | शैलेन्द्र कुमार, लेखाकार         | 37           |
| 17.      | दोस्त ना जाने कहाँ गुम हो गया                | शिवजी पाण्डेय, लेखाकार           | 38           |
| 18.      | नौकरी                                        | शिवजी पाण्डेय, लेखाकार           | 39           |
| 19.      | नौकरी ही मंजिल                               | सबिता साव, क.अनुवादक             | 39           |
| 20.      | सच्ची मित्रता                                | मीना पी.जे. एक्का, व.लेखाधिकारी  | 40           |
| 21.      | महीनों का नामकरण                             | शशिकान्त कुमार, लेखाकार          | 44           |
| 22.      | जीवन का लक्ष्य                               | अमित कुमार साह, व.लेखाकार        | 46           |
| 23.      | समाज में नारी का स्थान                       | आर शांति, व. लेखाधिकारी          | 47           |
| 24.      | <i>आपके अभिमत</i>                            | <i>हिंदी अनुभाग</i>              | 48           |



## ‘राम सुजस सुखमूल’

डॉ. सुभाषचंद यादव, हिंदी अधिकारी

ईश्वर के नाम के स्मरण पर विचारकों और संतों का सदा से विशेष जोर रहा है। उपनिषद् और अन्य धार्मिक ग्रन्थ भी इसी विचार को प्रस्तुत करता है। जब-जब मानवसमाज और मानव जीवन खतरे में हो अथवा धर्म का क्षरण चरम पर हो तो प्रभु किसी न किसी रूप में प्रकट होते हैं उसी यशोगान से प्रभु का स्मरण करना भक्तों का भाव रहता है। ईश्वर के प्रगट जीवन चरितों और उनके गुणों का बखान अलग-अलग तरीके से किया गया है अतः रामकथा नामक हरिगाथा को भी भक्तों ने प्रभु का लीलागान बतलाकर अलग-अलग तरीके से गाया है। अब तक इतने अवतार हुए हैं कि उन सब के चरित्र का गान किया जाए तो अनेक कल्प लग जाएँगे लेकिन प्रभुगाथा और यशोगान पूर्ण नहीं हो पाएगा। हरि के विविध अवतारों का यशोगान अलग-अलग है लेकिन अंतिम रूप से वो परब्रह्म (राम) का ही भजन कर रहे होते हैं- *हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता॥*

*रामचंद्र के चरित सुहाए। कल्प कोटि लागि जाहिं न जाए॥ मानस/1/139/चौ.3*

वस्तुतः रामगाथा लोककल्याण में जिए एक महान व्यक्तित्व का गान है जो सृष्टि में अनुपम ध्वनि-नाद क्षमता से संपन्न है। उसका ध्यानमात्र जीव की मनोदशा और सामाजिक स्थिति को उन्नत दशा की तरफ उन्मुख कर देता है। राम का ध्यान सृष्टि की अगोचर प्राकृतिक शक्तियों को उत्प्रेरित करता है और जीव को सदोन्मुख करता है। चूँकि दुख व्यक्ति के पुरुषार्थ को जगाकर जीवन को गति प्रदान करता है। रामकथा पुरुषार्थ को जगाने वाली मानवता की परिक्रमा है और साथ ही कर्म, त्याग और भक्ति की त्रिवेणी भी

*रावन प्रणेता है लूट-खसोट और राक्षसी चिंतनधारा का, जिसके यहाँ मानवजीवन और दबे-कुचले असंगठित जीवन का कोई मोल नहीं था और उनके धार्मिक अधिकारों का कोई रक्षक नहीं था। वहाँ सत्य वही था जो रावन सत्ता उद्धोषित करती थी, वहाँ कानून वही था जो रावन के हित में था। वनवासियों की आबरू का कोई महत्व नहीं था रावनसत्ता में। सीताहरण वन्यजीवन में नारीजीवन की घोर असुरक्षित अवस्था को उजागर करता है। नारीहरण वन और रावनसत्ता में एक सामान्य घटना थी। राम अपने युग के प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने नारी रक्षा के लिए वानरों और वनवासियों को संगठित कर नारी जीवन के मोल और उसकी संप्रभुता का सम्मान करने का विचार प्रवाहित कर एक स्थापित, अहंकारपूर्ण, निरंकुश, दुर्गम और दुर्जेय सत्ता को धराशाही किया।*

है। राम जीवन को उच्च से उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुंदर से सुंदरतम बनाते हैं।

मानस में शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! जिनकी कृपा से सब प्रकार का संशय और भ्रम मिट जाता है, वही कृपालु रघुनाथ हैं। जिनका आदि अंत किसी ने नहीं पाया। वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके इस प्रकार बताया है कि वह ब्रह्म बिना ही पैर के चलता है, बिना कान के ही सुनता

हैं, बिना ही हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, बिना मुँह के ही सभी रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के ही अनन्य वक्ता है। जिसका वेद और महर्षि वर्णन करते हैं तथा मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम हैं।

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।

सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥

तुलसीदासजी ने रामगाथा के प्रभाव को यह कहकर व्यक्त किया है-

‘बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायक फल चारि’।

और बालकाण्ड में कहा है ‘रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ’ फिर एक जगह बालकाण्ड में कहा गया है ‘बरनउ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ’।



श्रीराम संसार को मार्ग बताने वाले व्यक्तित्व हैं। उनका जन्म नकारात्मक शक्तियों के उन्मूलन के लिए हुआ था। राम ने आरंभ में दुखों का वरण किया ताकि प्रजा सुखी रहे। उनसे दूसरों का दुख नहीं देखा गया तो उन्होंने वनवास का वरण किया। जहाँ उन्होंने रावन नामक पैतरेबाज और यातनादायी सत्ता का मार्ग अवरुद्ध किया तथा वनवासियों के जीवन स्तर को मानवाधिकारों के स्तर तक उन्नत किया जिनकी उन्नति में रावन नामक निरंकुश और हाहाकारी सत्ता प्रमुख बाधा बनी हुई थी। रावन प्रणेता है लूट-खसोट और राक्षसी चिंतनधारा का, जिसके जहाँ मानवजीवन और दबे-कुचले असंगठित जीवन का कोई मोल नहीं था और उनके धार्मिक अधिकारों का कोई रक्षक नहीं था। वहाँ सत्य वही था जो रावन सत्ता उद्धोषित करती थी, वहाँ कानून वही है जो रावन के हित में था। वनवासियों की आबरू का कोई महत्व नहीं था रावनसत्ता में। सीताहरण वन्यजीवन में नारीजीवन की घोर असुरक्षित अवस्था को उजागर करता है। नारीहरण वन और रावनसत्ता में एक सामान्य घटना थी। राम अपने युग के प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने नारी रक्षा के लिए वानरों और वनवासियों को संगठित कर नारी जीवन के मोल और उसकी संप्रभुता का सम्मान करने का विचार प्रवाहित कर एक स्थापित, अहंकारपूर्ण, निरंकुश,

दुर्गम और दुर्जेय सत्ता को धराशाही किया। इसीलिए तुलसीदासजी श्रीरामजस को वो सत्संग कहते हैं जिससे प्राप्त सुख की कोई तुलना नहीं है। स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए, तो भी वे सब मिलकर दूसरे पलड़े पर रखे हुए सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो क्षण मात्र के राम-भजन (सत्संग) से प्राप्त होता है-

*तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।*

*तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ (मानस/5/दोहा-4)*

सम्पूर्ण भगवद्वाथा एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला उपाय है। यह महामंत्र है। इसी महामंत्र को शिवजी जपते रहते हैं जिसके प्रभाव से उनके गले में धारण किया हुआ कालकूट विष भी उनके लिए अमृत बना हुआ है और उनकी तपोस्थली काशी को मुक्तिदायनी की शक्ति प्राप्त हुई है। तभी तुलसी कहते हैं-

*सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।*

*सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ (मानस/5/दो.60)*

वो श्री रघुवीर का नाम ही है जिसके प्रभाव से पानी में पाषाण भी तैर जाता है। पत्थर और पानी की प्रकृति विरुद्ध है लेकिन राम नाम का प्रभाव उस विरुद्ध स्वभाव में भी सामंजस्य बिठाने में सक्षम है और पत्थर का भी पानी में तैरना संभव हो पाता है। ऐसे राम के नाम को छोड़कर यदि कोई किसी और का स्मरण या वंदन करता है तो वो मतिमंद अर्थात् मूर्ख ही कहा जा सकता है-

*श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।*

*ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥ (मानस/5/दो.3)*

इसी महत्व के कारण कहा गया है कि नाम महिमा में संसार में जितनी भी नाम शक्तियों का शोध हुआ है अथवा श्रुति अर्थात् वेद अथवा धर्म-ग्रंथों ने एक से बढ़ाकर एक नाम गिने हैं लेकिन उनमें से राम का नाम ही सर्वाधिक शक्तिशाली, सम्पूर्ण कल्याण का हेतु है अतः वही स्मरणीय है-

*जयपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तैं एका॥*

*राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥*

*(मानस/3/41/चौ.4)*

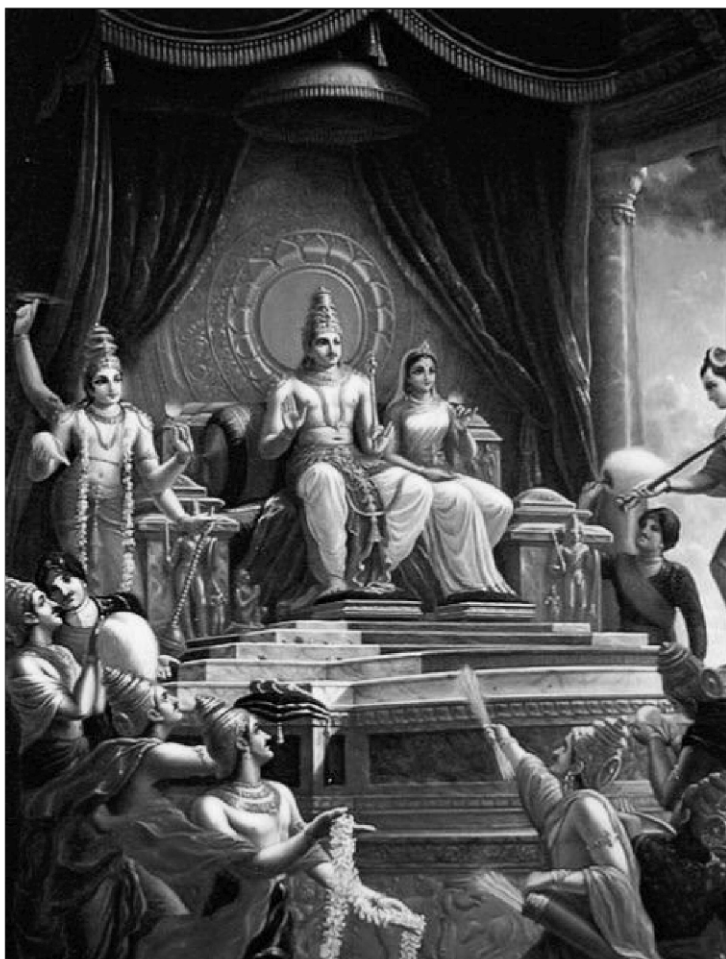
राम अनादि है और वे ही अवध के स्वामी के रूप में प्रकट हुए हैं अतः उनका कथारूपी जसगान का वेद व वेदज्ञ अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं, मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम रूप में प्रगट हुए हैं। प्रभु राम रघुनाथजी का चरित्र बड़ा ही विचित्र है, उसको पहुँचे हुए ज्ञानीजन ही तत्त्व से समझ पाते हैं। जो मंदबुद्धि हैं, वे तो विशेष रूप से मोह के वश होकर हृदय में कुछ दूसरी बात ही समझ बैठते हैं। राम की कथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह दूर कर देती है। इसे आदर से सुनो। हर्ष, शोक, ज्ञान, अज्ञान और अभिमान- ये सब जीव के धर्म हैं। राम तो व्यापक ब्रह्म, परमानंदस्वरूप, परात्पर

प्रभु और पुराण पुरुष हैं। इस बात को सारा जगत जानता है। यह जगत प्रकाश्य है और राम इसके प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ माया भी सत्य-सी भासित होती है। राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुंदर है॥ [रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥]  
इतना ही नहीं वे कहते हैं कि राम की कथा कामधेनु के समान है जो सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है, और सत्पुरुषों के समाज ही सब देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा-

*रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।*

*सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि॥ मानस/1/113*

अतः राम का यश ही वह परम शक्ति है जो सुख का मूल है। जीव की अनेक अवस्थाएँ काही गई है। देह में उसकी अलग व्यवस्था और स्थिति है तो देहातीत होने पर जीव की स्थिति अलग होती है। जीव किसी भी स्थिति में हो यदि उसकी मनोवृत्ति राम सृजस में रही है तो वह माया का प्रेरा सदैव सुखमूल स्थिति में ही रहेगा। ऐसा ही यहाँ तुलसीदास जी व्यक्त करते हैं जब वे मानस में कहते हैं कि राम का सुंदर यश कलियुग के पापों का नाश करने वाला, संशय का शमन करने वाला और सुख का मूल है जो लोग इसे आदरपूर्वक सुनते हैं, उन पर राम प्रसन्न रहते हैं-



*कलिमल समन दमन मन राम सृजस सुखमूल।*

*सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल॥ [मानस/3/दो.6(क)]*



## सेवानिवृत्ति के बाद

*‘सेवानिवृत्ति सड़क का अंत नहीं, यह बुलंद राजमार्ग की शुरुआत है’*

*जूलियट विमला बी, स.लेखाधिकारी*

सेवानिवृत्ति की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया प्रकृति में जीवन के अन्य भावनात्मक चरणों के पैटर्न का अनुसरण करती है। आपके द्वारा बचाए गए धन का उपयोग करने का समय आ गया है। इसका इस्तेमाल करें और इसका आनंद लें। इसे केवल उन लोगों के लिए न रखें जिन्हें आपके द्वारा इसे प्राप्त करने के लिए किए गए बलिदानों की कोई खबर नहीं है अथवा उनके प्रति कोई कोमल भावना नहीं है। याद रखें कि आपकी मेहनत की कमाई के लिए बड़े विचारों वाले बेटे या बहू से ज्यादा खतरनाक कुछ नहीं है। चेतावनी: यह निवेश के लिए भी एक बुरा समय है, हो सकता है कि यह तथ्य आपको अद्भुत या मूर्खतापूर्ण प्रतीत हो। बहरहाल सच्चाई यही है कि सेवानिवृत्ति के पश्चात मस्तिष्क को आराम देने की उम्र में निवेश केवल समस्याएं चिंताएँ और अशांति लाता है जबकि यह आपके लिए आनंद लेने और शांति से जीने का वक्त है। याद रखें शांति का जीवन आपकी आयु में 5 से 10 साल की वृद्धि करता है।

अपने बच्चों और नाती-पोतों की आर्थिक स्थिति के बारे में चिंता करना बंद करें और अपना पैसा खुद पर खर्च करने का बुरा न मानें लेकिन याद रखें आपके आसपास आपकी दौलत पर मँडराते लोग इसे बुरा मानने के लिए आपको विवश करने का प्रयास करेंगे। हो सकता है फर्बियाँ कसे अथवा पुरानी कहावतों को नया रूप देकर मनघड़न्त तथ्य पेश करें लेकिन आप सावधान रहें। आपने कई वर्षों तक उनकी देखभाल की है और आपने उनके लिए वह सब किया है जो आप कर सकते थे। आपने उन्हें शिक्षा, भोजन, आश्रय और सहायता दी

*सेवानिवृत्ति के बाद जीवन का मुख्य लक्ष्य अपने जीवन साथी के साथ अपने पैसे का आनंद उठाना है। एक दिन आप में से एक को दूसरे की कमी खलेगी और उसके बाद आपका पैसा उनको कोई आराम नहीं दे सकेगा, तो साथ में इसका आनंद उठाएँ। अपनी पसंद की जगहों की यात्रा करें। छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव न पालें और इनका तनाव न लें। आपने अपने जीवन में पहले ही बहुत कुछ हासिल कर लिया है। आपके पास अच्छी और बुरी सभी तरह की यादें हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान को सुंदर बनाएँ। अतीत को अपने ऊपर हावी न होने दें तो भविष्य को आपको डराने का मौका न दें। छोटी-मोटी समस्याओं और बातों को भूल जाना चाहिए। अपने परिवार से प्यार करें। याद रखें कि एक आदमी तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक उसके पास बुद्धि और प्रेम होता है।*

तथा काबिल बनाकर उनको अपने पैरों पर खड़ा कर दिया बस यही आपकी जवाबदेही समाप्त हुई। अब जिम्मेदारी उनकी है कि वे अपना खुद का पैसा कमाएं और आपकी प्रतिष्ठा को कायम रखें।

बिना ज्यादा शारीरिक प्रयास के, स्वस्थ जीवन बनाए रखें। हल्का व्यायाम करें, जैसे हर दिन टहलना, अच्छा खाना और अच्छी नींद लेना। इस उम्र में बीमार होना आसान है लेकिन उसके बाद

स्वस्थ होना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि आपको अपने आप को अच्छे साँचे में रखने और अपनी चिकित्सा और शारीरिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है। यह ध्यान रखें कि अपने डॉक्टर के संपर्क में रहें, तब भी परीक्षण करवाते रहें जब आप अच्छा और स्वस्थ महसूस कर रहे हों।

जीवन साथी के लिए हमेशा सबसे अच्छी और खूबसूरत चीजें खरीदें। सेवानिवृत्ति के बाद जीवन का मुख्य लक्ष्य अपने जीवन साथी के साथ अपने पैसे का आनंद उठाना है। एक दिन आप में से एक को दूसरे की कमी खलेगी और उसके बाद आपका पैसा उनको कोई आराम नहीं दे सकेगा, तो साथ में इसका आनंद उठाएँ। अपनी पसंद की जगहों की यात्रा करें। छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव न पालें और इनका तनाव न लें। आपने अपने जीवन में पहले ही बहुत कुछ हासिल कर लिया है। आपके पास अच्छी और बुरी सभी तरह की यादें हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान को सुंदर बनाएँ। अतीत को अपने ऊपर हावी न होने दें तो भविष्य को आपको डराने का मौका न दें। छोटी-मोटी समस्याओं और बातों को भूल जाना चाहिए। अगर किसी ने आपको ठेस पहुंचाई है तो उसे माफ कर दीजिए। यदि आपने किसी को ठेस पहुंचाई है तो अहंकार दूर रखकर क्षमा माँगे। अहंकार और नाराजगी की पोटली को अपने साथ ना घसीटें क्योंकि ये जीवन में केवल कड़वाहट और अशांति बढ़ाती हैं जो दीर्घायु की प्रबल शत्रु हैं। अपनी चिंताओं को हंसकर दूर करें। याद रखें, आप भाग्यशाली लोगों में से एक हैं जो और लंबा जीवन जीने में कामयाब रह सकते हैं। ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जो कभी आपकी उम्र तक नहीं पहुँच पाते। उम्र चाहे जो भी हो, अपने प्यार को हमेशा जिंदा रखें। अपने साथी से प्यार करें। अपने परिवार से प्यार करें। याद रखें कि एक आदमी तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक उसके पास बुद्धि और प्रेम होता है।



अपनी उम्र के लिए फैशन के रुझान की दृष्टिकोण न खोएं और अपनी खुद की शैली को बनाए रखें। हमेशा अप-टू-डेट रहें। अखबार पढ़ो, खबरें देखो और उनका विश्लेषण करो। दोस्तों की मंडली बनाकर खूब गप्पशप किया करें। ऑनलाइन जाएं और पढ़ें कि लोग क्या कह रहे हैं। सुनिश्चित करें कि आपके पास एक सक्रिय ईमेल खाता है जिसके माध्यम से सोशल नेटवर्क का

उपयोग करने का प्रयास करें। पुराने दोस्तों से मुलाकात होगी तो हैरान रह जाएंगे। स्थानीय धर्मार्थ संगठनों में स्वयंसेवा करें। युवा पीढ़ी और उनके विचारों का सम्मान करें। हो सकता है कि उनके आपके जैसे आदर्श न हों, लेकिन वे भविष्य हैं और दुनिया को अपनी दिशा में ले जाएंगे। सलाह दें, आलोचना नहीं और उन्हें याद दिलाने की कोशिश करें कि कल का ज्ञान आज भी लागू होता है। कुछ लोग अपने स्वर्णिम वर्षों को गले लगाते हैं तो कुछ लोगों का जीवन कड़वा हो जाता है। अपने दिन बर्बाद करने के लिए जीवन बहुत छोटा है। अपना समय सकारात्मक, खुशमिजाज लोगों के साथ बिताएं, इससे आप पर स्वस्थ असर पड़ेगा और आपको दिन उतने ही बेहतर लगने लगेंगे जैसे युवावस्था में लगते थे। कड़वे लोगों के साथ अपना समय बिताने से आप वृद्ध महसूस करेंगे और आसपास रहना कठिन हो जाएगा। अपने बच्चों या नाती-पोतों के साथ रहने के प्रलोभन के सामने आत्मसमर्पण न करें (यदि आपके पास वित्तीय विकल्प है)। ज़रूर परिवार से घिरे रहना बहुत अच्छा लगता है लेकिन हम सभी को अपनी निजता की ज़रूरत है। उन्हें उनकी निजता की ज़रूरत है और आपको अपनी। फिर भी, ऐसा तभी करें जब आपको लगता है कि आपको वास्तव में मदद की ज़रूरत है या आप अकेले नहीं रहना चाहते हैं।

अपनी हॉबी को न छोड़ें। यदि आपके पास कोई हॉबी नहीं है, तो नई हॉबी बनाएं। आप यात्रा कर सकते हैं, खाना बना सकते हैं, पढ़ सकते हैं। आप एक बिल्ली या एक कुत्ता गोद ले सकते हैं। एक किचन गार्डन विकसित कर सकते हैं। घर से बाहर निकलें, उन लोगों से मिलें जिन्हें आपने कुछ समय से नहीं देखा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि समय-समय पर घर से बाहर निकलें। संग्रहालयों में जाएं, पार्क में टहलें। विनम्र स्वर में बोलें और बहुत अधिक शिकायत या आलोचना न करने का प्रयास करें क्योंकि ऐसा करना आपको अपने परिवार और आस-पास की नई पीढ़ी से दूर कर देगा। परिस्थितियों को वैसे ही स्वीकार करने का प्रयास करें जैसी वे हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ दर्द और बेचैनी साथ-साथ चलती है। कोशिश करें कि उन पर ध्यान न दें बल्कि उन्हें जीवन के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करें। जब तक आप जीवित हैं, आप इस समय का हिस्सा हैं। समय का आनंद लें। चिकित्सीय आपातकाल, स्वास्थ्य जांच और आकस्मिक एकबारगी खर्चों जैसे घर की मरम्मत आदि के लिए अलग से आपात फंड बनाएं। खर्चों में खाना, उपभोगी सेवाएं, कपड़े, मनोरंजन और यात्रा शामिल हैं, जो बजट के बाहर भी जा सकते हैं। इन खर्चों पर नियंत्रण पाने के लिए समझदारी से काम लें। अपनी वसीयत तैयार कीजिए। अगर आपने पहले ही वसीयत बनाई हुई है, तो साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें और सुनिश्चित करें कि आपकी संपत्ति (भौतिक और वित्तीय दोनों) की सूची सामयिक है। हर संपत्ति के लिए नॉमिनी का नाम लिखें।

## बच्चों में इंटरनेट और ऑनलाइन गेम्स की लत

एम.सुधाकरन/ वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आज के बच्चे हमारे देश के लिए कल का भविष्य हैं, पर समय के बदलते दौर ने हमारे देश के भविष्य को एक ऐसे मुकाम पर खड़ा कर दिया है जहाँ से उन्हें वापस लाना एक चुनौती साबित होने लगी है। इसका प्रमुख कारण इंटरनेट के जरिये उपलब्ध व्हाट्सप्प, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब के साथ-साथ ऑनलाइन गेम्स भी हैं। आजकल के बच्चे जो इंटरनेट पर काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं उससे उनका समय पढ़ाई में ना लगकर इंटरनेट पर बर्बाद हो रहा है। वे अपना ज्यादा से ज्यादा समय इंटरनेट में व्यतीत करते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पूरे विश्व में देखा जाए तो इंटरनेट इस्तेमाल में भारत दूसरे स्थान पर है। पूरी दुनिया के युवाओं में विभिन्न प्रकार के बुरी आदतें हैं, उनमें इंटरनेट और वीडियो गेम्स का उपयोग अवांछित है। इंटरनेट का इस्तेमाल और ऑनलाइन गेम्स खेलने की संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है। ऑनलाइन गेम्स भी विभिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ बच्चों की मनोवैज्ञानिक तरीके से आदतें बिगाड़ते हैं तो कुछ बच्चों का समय नष्ट करते हैं। जब से बच्चे इंटरनेट और ऑनलाइन गेम्स का प्रयोग काफी ज्यादा करने लगे हैं तब से बच्चों में बीमारियाँ काफी बढ़ने लगी हैं जैसे-



- बच्चे इंटरनेट का प्रयोग एक जगह बैठकर करते हैं इसके कारण न तो वे कहीं आते-जाते हैं, न ही टहलते हैं, न एक्सरसाइज, न ही खेलते-कूदते हैं। ये सभी क्रिया-कलाप न होने के कारण उनके अंदर कई बीमारियाँ आ जाती हैं।



- इससे बच्चों की आँखों को भी काफी नुकसान होता है और उनकी बौद्धिक क्षमता का भी क्षय होता है। इसका दुष्प्रभाव यह भी है कि बच्चे खराब मानसिक कौशल का शिकार होते हैं और उनमें लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास नहीं हो पाता।
- कई इंटरनेट व्यसनी बच्चों में चिंता संबंधी समस्याएँ और अवसाद विकसित हो जाता है।
- इंटरनेट के प्रयोग के आदी बच्चे खाना खाना, विद्यालय के गृह-कार्य, अपने प्रियजनों को नजरअंदाज करना आदि कु-प्रवृत्तियाँ शामिल हो जाती हैं।
- इसके अलावा आज के समाज में यह बड़ी अफसोस की बात है कि माता-पिता अपने बच्चों का ध्यान भटकाने के लिए उन्हें आईपैड थमा देते हैं। छोटे उम्र से ही बच्चों में इंटरनेट पर निर्भरता विकसित होने लगती है। खाना खाते समय भी बच्चे कुछ देखने के लिए स्क्रीन के ओर आकर्षित होने लगते हैं।
- इससे बड़ी दुखद घटना यह है कि अब शिक्षा के लिए स्मार्टफोन और लैपटॉप आवश्यक हैं। नोट्स, व्याख्यान और सभी संसाधन ऑनलाइन पाए जा सकते हैं। यदि किसी छात्र का सारा समय पढ़ाई और आराम करने में ऑनलाइन व्यतीत होता है, तो वास्तविक जीवन में उपस्थिति के लिए उसके पास समय नहीं है।

इंटरनेट के लत को कम करने के उपाय-

- अपने बच्चों को इंटरनेट पर या वीडियो गेम खेलने में जितना समय लगाता है, उसे सख्ती से सीमित करें।
- उन्हें पढ़ने, बाहर खेलने, या दोस्तों और परिवारों से मिलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे ऑनलाइन क्या कर रहे हैं।
- पारिवारिक गतिविधियाँ और सैर-सपाटे की योजना बनाएँ जिसमें सामाजिक मेलजोल शामिल हो।
- यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आपके बच्चे केवल अपनी उम्र के सीमित गेम्स ही खेलें।

अतः हम यह कह सकते हैं कि सभी कार्यकलापों के साथ-साथ वीडियो गेम्स खेलना भी जीवन का अभिन्न अंग है और यह एक अच्छी गतिविधि है लेकिन हर चीज की तरह स्वास्थ्य को भी प्रमुखता देना होगा। सामाजिक ज़िम्मेदारी भी निभानी होगी जिससे सभी चीजों में संतुलन बना रहे।

## प्रदूषण रोकने के उपाय

पवन कुमार सिंह, लेखाकार

प्रदूषण का अर्थ है “दोषयुक्त, अपवित्र एवं अशुद्ध होना। अपने नाम के अनुरूप प्रदूषण न केवल मानवजाति बल्कि समस्त प्राणियों के लिए प्राणघातक बना हुआ है। यह बात आज का मानव भली-भाँति जनता भी है और समझता भी है लेकिन व्यवस्था से बंधा इसे बढ़ाने में योगदान देता रहता है। व्यावहारिक रूप से मानव की प्राप्ति की चाहत और सुख-सुविधाओं की वृद्धि की इच्छा ने उनके द्वारा किए गए नित-नए प्रयोगों ने इस प्रदूषण में दिन-प्रतिदिन बढ़ोतरी की है। प्रदूषण का ज्ञान केवल किताबों तक और बातें करने तक तक सीमित नहीं रह गया है। पृथ्वी के अस्तित्व को बचाने के लिए इसे रोका जाना जरूरी हो गया है। आज हम जिस हवा में सांस लेते हैं वह खतरनाक स्तर तक ज़हरीली हो चुकी है। जल संसाधनों में भरा पानी खतरनाक स्तर तक केमिकलों से भरा पड़ा है।



हर तरफ प्लास्टिक रेपर्स और बोटलों के अंबार पड़े दिखाई देते हैं। आज प्रदूषण (जल, वायु, भूमि, ध्वनि) एक विकराल वैश्विक समस्या का रूप ले चुका है। हर देश प्रदूषण नियंत्रण के लिए हाथ-पैर मार रहा है। इस भयानक समस्या के समाधान पर निरंतर कार्य चल रहा है। हमारी सरकार और हम अपने स्तर पर प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं-

- प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करना आवश्यक है क्योंकि जितनी अधिक जनसंख्या होगी मानव आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उतना ही अधिक प्राकृतिक संसाधन नष्ट होंगे।
- वनों की कटाई को रोका जाए एवं वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए साथ ही वृक्षों की संख्या अधिक होने के लाभों के विषय में लोगों को जागरूक करना चाहिए।
- कारखानों के चिमनियों में फ़िल्टर लगाना चाहिए एवं चिमनियों को अधिक ऊँचाई पर लगाना चाहिए। कारखानों द्वारा निकलने वाले जल को कृत्रिम तालाबों में रासायनिक विधि द्वारा उपचारित करने के उपरांत नदियों में छोड़ने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए।
- खाद्य उत्पादन में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करके जैविक उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
- कम शोर वाले मशीन उपकरणों के निर्माण एवं उपयोग पर ज़ोर देना चाहिए एवं उद्योगों को शहरों या आबादी वाले स्थान से दूर स्थापित करना चाहिए।
- हमें एकल प्लास्टिक एवं अन्य प्लास्टिक के उपयोग को रोकना चाहिए एवं पर्यावरण के अनुकूल वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए।
- घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट का समुचित निस्तारण करना चाहिए।
- वर्षा के जल को संचित करके उसका पुनः उपयोग कर भूमिगत जल को संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए। अर्थात् हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि “जल है तो कल है”।
- नवीनीकरणीय ऊर्जा के स्रोत को बढ़ावा देना चाहिए।
- कार्यालय में आने-जाने के लिए जितना हो सके उतना हमें सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करना चाहिए। इसके अलावा हमें अपने कदम सोलर फनेल की ओर बढ़ाना चाहिए।
- संगीतों के श्रवण के लिए जितना हो सके उतना हमें उसकी ध्वनि कम रखनी चाहिए।
- जब भी संभव हो पैदल चलें या अपनी साइकिल चलाएं जो प्रदूषण रोकने में मदद के लिए सबसे अच्छी चीजों में से एक है।

छोटी यात्रा के लिए अपनी कार का उपयोग करना बंद कर दीजिए। यदि मौसम अच्छा हो तो पैदल या साइकिल से जाने पर विचार करें। इससे वायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी और इस प्रक्रिया में आपका कुछ व्यायाम हो जाएगा और ताज़ी हवा भी मिल जाएगी। लोक वाहनों के माध्यम से सफ़र को तरजीह दें जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने का एक बढ़िया तरीका है। पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन का उपयोग करते समय आपको सड़क पर नज़र रखने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं होती जिससे हमारी सुरक्षा सुनिश्चित होती है। पर्यावरण की सुरक्षा हम सबके लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए हमें प्रत्येक कार्य से पहले पर्यावरण के अनुकूलता का ध्यान रखना होगा। जब पर्यावरण स्वच्छ रहेगा तभी मनुष्य स्वस्थ रहेगा।

## प्रसन्नता में ही स्वर्ग

राजीव कुमार, लेखाकार

संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने जीवन से हताश हो चुके हैं। वे कहते हैं, उन्हें इस जीवन ने दिया ही क्या है? जैसा उन्होंने सोचा था, वे अपना भविष्य उस प्रकार न बना सके किन्तु क्या उन्होंने अपने भविष्य को सर्वोत्तम बनाने के लिए कोई बल दिया था? हमारी असंतुष्टि का मुख्य कारण ये है कि जो हमारे पास है उनसे हमें संतुष्टि नहीं मिलती। मनुष्य अपनी मनोवांछित वस्तु तथा फल की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है और जिस वस्तु को पाने के लिए कल तक वो कठिन परिश्रम कर रहा था, आज वह उसे पाकर भी प्रसन्न नहीं होता क्योंकि उस वस्तु के प्रति उसकी रुचि घट जाती है। फिर उसकी दृष्टि किसी अन्य वस्तु पर जा टिकती है और जब वह उसे भी पा लेता है तो उससे भी उसे संतोष नहीं होता। उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ जाती है और वह किसी और वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करता है। इस प्रकार उसकी आत्मा कभी तृप्त नहीं होती और वह दुखी रहता है, भटकता है प्रसन्नता की तलाश में।

मनुष्य का सुख-दुख, संतोष-असंतोष आत्मा की वस्तु है न कि शरीर की। प्रसन्नता खरीदी नहीं जा सकती है। उचित दिशा में सोचना, उचित कार्य तथा दूसरों की सेवा ही प्रसन्नता पाने का मार्ग है। बहुत से ऐसे लोग भी देखने में आते हैं जो साधारण जीवन व्यतीत करते हुए बड़े संतुष्ट और प्रसन्न दिखाई देते थे किन्तु अचानक उन्हें ऐसे धन की प्राप्ति हो जाती है जिसके लिए उन्होंने कोई विशेष परिश्रम नहीं किया था और उसके बाद हम देखते हैं कि उनके जीवन की सारी प्रसन्नता उस धन के आने से ही छिन जाती है। उसकी इच्छाएँ कुछ इस कदर बढ़ जाती हैं कि उसकी सुख-शांति भंग हो जाती है। बहुत से लोग सोचते हैं कि ज्यादा पा लेने में सुख है। अधिक से अधिक पा लेने के लिए लोग व्याकुल रहते हैं। ऐसे लोगो को समझना चाहिए कि प्रसन्नता पा लेने में नहीं है, देने में है। प्रसन्नता हमारे विचारों में उपजती है। अच्छा काम करने से, निःस्वार्थ सेवा से, किसी की बोझ हल्का करने से, किसी और के लिए त्याग करने आदि से प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रसन्नता दौलत से नहीं खरीदी जा सकती। यह आत्मा से प्रकट होती है। जब आप किसी के लिए अच्छा करते हैं तो आपको आत्मसंतोष होता है यही प्रसन्नता है।

यह बड़े दुख की बात है कि कुछ लोग संसार को यह उपदेश देते हैं कि स्वर्ग तो मरने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। शताब्दियों से तथाकथित धर्माधिकारी जनमानस को भ्रमजाल में फंसाकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं और मनुष्य को नरक का भय दिखाकर उसे और भी अधिक पतित बना रहे हैं। एक तरफ तो इनका कहना है कि स्वर्ग विशिष्ट व्यक्तियों को मिलता है, वहीं दूसरी ओर कहते हैं कि वैसा विशिष्ट व्यक्ति कोई न कोई विरला ही होता है। कभी कहते हैं कि कर्म से व्यक्ति स्वर्ग पा सकता है कैसी अजीब विडम्बना है ये! धर्म के ठेकेदारों के दिमाग में यह बात कभी नहीं आई कि स्वर्ग प्रसन्नता में है और प्रसन्नता मिलती है त्याग से।



दूसरों को पीड़ित करके स्वयं को यह तसल्ली देना कि मैंने अच्छा किया, यह केवल स्वयं को धोखा देना है। शुभ और स्वार्थ रहित कार्य, दूसरों की सहायता, मानवता की सेवा, उच्च विचार, ईमानदारी और परिश्रम प्रसन्नता प्राप्ति के साधन हैं। प्रसन्नता पर किसी एक का एकाधिकार नहीं है कोई भी इसे अपने लिए आरक्षित नहीं रख सकता। यह जीवन के बाज़ार में उसी को प्राप्त होता है जो इसका मूल्य चुकाता है। यदि लोग उगते सूर्य को देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर सके तो उनका सारा दिन प्रसन्नता में बीतेगा, रात शांति से बीतेगी और दूसरे प्रभात भी उन्हें सूर्य उदय के दर्शन होंगे। इस प्रकार जीवन चक्र प्रसन्नता से बीत जाएगा। यह संसार दर्पण की भांति असली चेहरा दिखाता है। यदि हम इस पर हँसेगे तो यह भी हम पर हँसेगा और हम मुँह चिढ़ाएंगे तो यह भी मुँह चिढ़ाएगा। इसी प्रकार प्रसन्नता हमारे मानसिक चिंतन का परिणाम है। हम दूसरों को जो देते हैं, वही हमें वापस मिलता है।



यह बड़े दुख की बात है कि कुछ लोग संसार को यह उपदेश देते हैं कि स्वर्ग तो मरने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। शताब्दियों से तथाकथित धर्माधिकारी जनमानस को भ्रमजाल में फंसाकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं और मनुष्य को नरक का भय दिखाकर उसे और भी अधिक पतित बना रहे हैं। एक तरफ तो इनका कहना है कि स्वर्ग विशिष्ट व्यक्तियों को मिलता है, वहीं दूसरी ओर कहते हैं कि वैसा विशिष्ट व्यक्ति कोई न कोई विरला ही होता है। कभी कहते हैं कि कर्म से व्यक्ति स्वर्ग पा सकता है कैसी अजीब विडम्बना है ये! धर्म के ठेकेदारों के दिमाग में यह बात कभी नहीं आई कि स्वर्ग प्रसन्नता में है और प्रसन्नता मिलती है त्याग से। यदि हम इस जीवन में सुख, आनंद, हर्ष, प्रसन्नता, निःस्वार्थता, सेवाभाव का जीवन जी सके तो कोई कारण नहीं है कि हम स्वर्ग का आनंद न ले सके। परमात्मा ने मनुष्य को पूर्ण मानव बनाया है यदि मनुष्य परिपूर्ण नहीं बन पाया तो इसका अभिप्राय है कि वह ईश्वर के कार्यों से भटक गया है। इसमें मनुष्य का ही दोष है। इसलिए प्रसन्न रहो परोपकारी बनो।

## कर्म का रहस्य

शैलेन्द्र कुमार, लेखाकार

जिसमें आप खो जाएंगे, उसे पा जाएंगे। यही नियम है कि खोकर ही पाया जाता है। यदि आप समुद्र से दूर-दूर रहें और चाहे कि उसकी अनन्त गहराइयों में छिपे मोती आपको मिल जाएँ, तो यह असंभव है। इस असंभव को आप अपने प्रयासों से, अपने कर्म के प्रति निष्ठा रखकर संभव बना सकते हैं। असफल व्यक्तियों में बहुत से लोग ऐसे हैं जो शारीरिक और मानसिक रूप से बिल्कुल स्वस्थ हैं। फिर भी वे पिछड़े रहते हैं और जीवन की दौड़ में दूसरे वे लोग आगे निकल जाते हैं, जो उनकी अपेक्षा शरीर और मस्तिष्क दोनों ही दृष्टि से कमजोर हैं। इसका कारण क्या है? कुछ लोग तर्क देते हैं कि अवसर की अनुकूलता और परिस्थितियाँ भी आगे बढ़ाने में सहायक होती हैं। कुछ सीमा तक यह बात भी सही है किन्तु सिर्फ यही बात नहीं है। एक बात और भी है जो आगे बढ़ने के लिए सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य है, वह है-कर्म।

कर्म सभी करते हैं। परिश्रम सभी करते हैं। सभी परिश्रम और लगन से कर्म करते हैं या उनसे कराया जाता है। मगर बहुत से लोग केवल वक्त काटते हैं। उनमें कर्तव्य परायणता नहीं होती है। सबकी नहीं तो बहुतो की सोच ऐसी है कि जितना वेतन उतना परिश्रम करते हैं। कुछ लोग जीवन को ऊँचा उठाने की सोचते तो हैं, परन्तु उनमें कार्यक्षमता की कमी होती है। वे जितना करना चाहते हैं उतना करने की क्षमता उनमें नहीं होती है। अपनी कार्यक्षमता बढ़ाना चाहते हुए भी वे बहुत सी अनभिज्ञताओं के कारण अपनी कार्यक्षमता नहीं बढ़ा पाते हैं। कार्यक्षमता बढ़ाकर कोई भी व्यक्ति ऊँचा उठ सकता है। अपनी आय बढ़ाने, समाज में प्रतिष्ठा पाने और नौकरी में तरक्की पाने के

*आज ही से प्रण करें कि आप हर कार्य समय पर करेंगे। कार्य को अधूरा छोड़ना बुरी बात है तो इसे भी छोड़ दीजिए। यह भी कार्यक्षमता का ह्रास है। यदि आप समय की कीमत नहीं समझते हैं तो भी आप लोगो की दृष्टि में गिर जाते हैं। समय सबसे महान है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों द्वारा परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु करोड़ो उपाय करने पर भी बीते हुए समय को नहीं बुलाया जा सकता इसलिए समय की कद्र करो। इससे लोगों को आप पर विश्वास हो जाता है कि आपने जिस काम को अपने हाथों में लिया है, उसके पूर्ण होने में कोई संदेह नहीं।*

लिए अधिक कार्यक्षमता होना आवश्यक है। कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए सर्वप्रथम तो व्यक्ति को अपने आत्मविश्वास को जगाना चाहिए। दूसरे किसी के सहारे की आशा न करके आत्म निर्भर बनना चाहिए। माता-पिता पर भी निर्भर नहीं रहना चाहिए। अपने पाँव पर खड़े होना बहुत आवश्यक है। यह कभी मत सोचिए आपके शरीर या मन में कम शक्ति है, आपके अंदर कम क्षमता है। कभी भी अपनी शक्ति को, अपनी कार्यक्षमता को कम करके मत आंकिये। अपनी शक्ति को पहचानिए। अपने निश्चय को दृढ़ कीजिए। अपने निर्णय पर अटल रहिए। कर्तव्य के प्रति सजग रहिए।

यदि ऑफिस में किसी कारण अधिक काम आ पड़ा है। छुट्टी के समय से कुछ देर बाद तक रुकना पड़ सकता है, ऐसी परिस्थिति में अधिकांश लोग काम छोड़ देते हैं। वे जितना दाम उतना काम वाली बीमारी के शिकार होते हैं। इस बीमारी से सदा बचे। यह अपने कर्तव्य के प्रति बेईमानी है। अगर आप जीवन में कुछ कर दिखाने की इच्छा रखते हैं तो आपकी सोच दूसरी होनी चाहिए। जो भी करें, पूर्ण आत्मविश्वास के साथ करें। कभी यह न सोचे की आप नहीं कर सकते हैं। आप सब कुछ कर सकते हैं। अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। ख्याली पुलाव ही न पकाए। कल्पनाशीलता या ऊँचे सपने देखना बुरी बात नहीं है

किन्तु केवल कहना और करने से बचना यह अकर्मण्यता है। आपको कर्मशील होना चाहिए। लोगों में आपकी चर्चा हो। ऐसे परिश्रमी लोग ही जीवन में असम्भव को संभव कर दिखाते हैं। ऐसे लोग कभी कमजोर नहीं रहते हैं। लोग आपको विश्वसनीय व्यक्ति के रूप में जाने। आपको इसके लिए तुरंत कदम उठाना चाहिए। आप सोचे कि आपने कोई ऐसा कार्य तो हाथ में नहीं लिया है जो आप पूरा नहीं कर सकते, चिन्तन कीजिए। अपने दिल को टटोलिए। आपको जो भी कमियां अपने अन्दर दिखायी दें, उन्हें दूर करने का सतत् प्रयास कीजिए। सच्चे प्रयासों से आप अपनी कमियों को दूर कर लेंगे। आप चाहे तो लोगों के विश्वसनीय बनकर प्रसिद्धि पा लेंगे। अभ्यास से विश्वसनीयता की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। बिना अभ्यास के यह सिद्धि नहीं मिलती। प्रतिदिन अभ्यास कीजिए। आप प्रतिदिन स्वयं से कहिए कि आप विश्वस्त बनेंगे। आप एक सच्चे और ठोस विचारों वाले व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे। कम बोलिये। मौन रहते हुये सोचिये कि जो भी बोलूंगा वह सच होगा। जो भी प्रण करूंगा, उसे पूरा करके दिखाऊंगा। जिस प्रण को करे, उसे शब्दों से दोहराइए। उसे पूरा करने में जुट जाइए। आज ही से विश्वस्त बनना शुरू कर दें। निश्चित रूप से आप शीघ्र विश्वस्त बन जाएंगे।

कर्म का गुप्त भेद यही है कि व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता बढ़ाएँ। कार्यक्षमता बढ़ाने के लिये समय की पाबंदी आवश्यक है। जो लोग समय की कीमत नहीं समझते, समय को बर्बाद करते हैं। समय भी उन्हें बर्बाद कर देता है। वे जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाते हैं, जो समय की कद्र नहीं करते हैं। आपको भी समय व्यर्थ होने या समय पर कहीं न पहुँचने की आदत है तो इस पर आज ही से ध्यान दें। उस आदत में सुधार करें। आज ही से प्रण करें कि आप हर कार्य समय पर करेंगे। कार्य को अधूरा छोड़ना बुरी बात है तो इसे भी छोड़ दीजिए। यह भी कार्यक्षमता का ह्रास है। यदि आप समय की कीमत नहीं समझते हैं तो भी आप लोगों की दृष्टि में गिर जाते हैं।

समय सबसे महान है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों द्वारा परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु करोड़ो उपाय करने पर भी बीते हुए समय को नहीं बुलाया जा सकता। इसलिए समय की कद्र करो। कार्यक्षमता में वृद्धि के लिए आत्मविश्वास, समय की पाबंदी और विश्वसनीयता अनिवार्य है। इन गुणों को अपनाइए। यदि आपने इन बातों पर ध्यान दिया तो आपकी कार्यक्षमता अवश्य ही बढ़ेगी। कार्यक्षमता बढ़ाने पर आप निरन्तर सफलता की ओर बढ़ते हैं। आपके सब काम समय पर पूरे होते हैं। आप जो चाहते हैं वही हो जाता है। जिस काम को आप हाथ लगाते हैं, वह हो जाना निश्चित हो जाता है। लोगों को आप पर विश्वास हो जाता है कि आपने जिस काम को अपने हाथों में लिया है, उसके पूर्ण होने में कोई संदेह नहीं। आपका नाम विश्वास का प्रतीक बन जाता है। आपकी कार्यक्षमता अधिक हो जाने पर सफलता के द्वार आपके लिये खुलते चले जाते हैं। 'कर्म से मुँह न मोड़ो, कर्म शरीर द्वारा की जाने वाली ईश्वर की सर्वोत्तम प्रार्थना है। इस धरती पर कर्म करते हुए सौ साल जीने की इच्छा रखो क्योंकि कर्म करने वाला ही जीने का अधिकारी है। जो कर्मनिष्ठा छोड़कर भोगवृत्ति रखता है, वह मृत्यु का अधिकारी बनता है।







हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह में स्टाफ सदस्यों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुति



हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह में स्टाफ सदस्यों द्वारा स्किट की प्रस्तुति



हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह में स्टाफ सदस्यों द्वारा माझम की प्रस्तुति



हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह में मनोरंजन करते हुए दर्शकों की झलक





हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह में स्टाफ सदस्यों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुति



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह में दर्शकों की झलकी



हिन्दी पखवाड़ा 2023 में हिन्दी स्पर्धा आयोजन की झलकी



हिन्दी पखवाड़ा 2023 में हिन्दी स्पर्धा आयोजन की झलकी





हिन्दी पखवाड़ा 2023 में हिन्दी स्पर्धा आयोजन की झलकी



हिन्दी पखवाड़ा 2023 में हिन्दी स्पर्धा आयोजन की झलकी



हिन्दी पखवाड़ा 2023 में हिन्दी स्पर्धा आयोजन की झलकी



हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह में दर्शकों की झलक





हिन्दी पखवाड़ा 2023 दीप-प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए अधिकारीगण



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह में ईशवंदना



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह में मंचस्थ अधिकारीगण



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह की झलकी



महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं का बिना किसी भेदभाव के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के अधिकार से है। क्या वास्तव में ये अधिकार आज हमारे देश और समाज में परिलक्षित हो रहा है शायद उतना नहीं अगर हो रहा होता तो हमारा देश महिलाओं के लिए स्वर्ग होता। हमारे धर्म ग्रंथ में कहा गया है कि “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता” किन्तु क्या यह चरितार्थ हो रहा है! घर तो छोड़िए शायद आज की तिथि में लोग देवताओं की पूजा करने के लिए मंदिर भी जाने में संकोच कर रहे तो नारी की पूजा तो बहुत दूर की बात है। हमारी प्राचीन सभ्यताओं में से एक सिंधु सभ्यता में माना जाता है कि मातृसत्तात्मक समाज था और मातृदेवी की पूजा तक होती थी किन्तु सिंधु सभ्यता से लेकर आज तक जैसे-जैसे समाज का विकास हुआ, महिलाओं को दरकिनार कर पुरुष प्रधान समाज बन गया। समाज ने चारों दिशाओं में प्रगति की किन्तु महिलाओं के अधिकारों और आकांक्षों को कहीं न कहीं दबाया और कुचला गया और ये इतना बढ़ा कि मैथलीशरण गुप्त जी को महिलाओं पर ये पंक्तियां लिखनी पड़ी- “अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी”



हमारा देश ऐसा है जहाँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री से लेकर लोकसभा स्पीकर जैसे उच्च पदों पर महिलाएँ विराजमान हुईं, ये हमारे देश के लिए गर्व की बात भी है किन्तु क्या महिलाओं के उच्च पदों पर बैठने से महिला सशक्तिकरण पूरा हो सकता है! शायद तब तक नहीं जब तक देश के कोने-कोने में बैठी महिलाओं का सशक्तिकरण नहीं हो जाता। आज भी अखबार के पन्ने चीख-चीख कर कहते हैं कि महिला सशक्तिकरण मात्र एक दिखावा है। हमारे समाज में कई महिलाओं ने कई उच्च पदों को प्राप्त किया है किन्तु जब आप उनके जिंदगी के पन्नों को पढ़ेंगे तो पायेंगी की



उनको उन पदों को प्राप्त करने के लिए हमारे देश, समाज और अपने परिवारों से कितना संघर्ष करना पड़ा। महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि “मैं उस दिन देश को सही मायने में स्वतंत्र मानूँगा जिस दिन इस देश की नारी रात के अंधेरे में भी सुरक्षित बाहर निकल पाएगी”। लेकिन आज शायद नारी दिन के उजाले में भी सुरक्षित नहीं हैं, यहाँ तक कि माँ के गर्भ में भी सुरक्षित नहीं है अगर सुरक्षित होती तो सरकार को गर्भपात कानून, दहेज निषेध कानून, बाल विवाह कानून, घरेलू हिंसा का कानून, कार्यस्थल पर उत्पीड़न का कानून, और इस सदी का सबसे बड़ा तीन तलाक कानून न लाना पड़ता। विडम्बना यह है कि इन कानूनों के बावजूद समाज में महिलाओं को उनके अधिकारों को तो छोड़िए अपने वजूद के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है।

आज महिला सशक्तिकरण सिर्फ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को ही देखने को मिलता है उसके बाद सब ढाँक के तीन पात। अभी कुछ दिन पहले ही अफगानिस्तान में तालिबान ने कक्षा 3 के बाद बच्चियों के पढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। ईरान में हिजाब से आजादी के लिए महिलाओं को सड़क पर निकलना पड़ा। हमारे देश की ओलम्पियन बेटियों को न्याय के लिए जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करना पड़ा और मणिपुर कि हृदय विदारक घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या महिलाओं को न्याय तब ही मिलेगा जब उनके साथ हुए घटना का वीडियो वायरल होगा? यह बहुत ही दुखद है। क्या हमारे समाज में महिलाओं को अपने अधिकार और न्याय के लिए दुर्गा का रूप धारण करना पड़ेगा? अगर ऐसा होता है तो शायद हमसे बेहतर सिंधु सभ्यता का ही परिवेश था जहाँ आज के जितना विकास तो नहीं था परंतु वो महिलाओं के सम्मान और अधिकार देने में हमसे कहीं बेहतर थे।

आज भी अलग-अलग धर्म, संप्रदाय रीति-रिवाजों के आधार पर महिलाओं को उनके अधिकारों से दूर किया जा रहा है, उनका शोषण हो रहा है उन्हें एक जिम्मेदारी की तरह देखा जा रहा है, उनको शिक्षा ही नहीं, मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित होना पड़ रहा है। महिलाओं को सम्मान इसीलिए नहीं मिलना चाहिए कि वो महिला हैं, उनको सम्मान इसलिए मिलना चाहिए क्योंकि उनको भी अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जीने का पूरा अधिकार है। कहा जाता है कि यदि पुरुष शिक्षित होता है तो उसका लाभ एक परिवार को मिलता है किन्तु एक महिला शिक्षित होती है तो उसका लाभ दो परिवारों को मिलता है। आज समाज में शिक्षा, जागरूकता, सम्मान के साथ-साथ संस्कारों की भी बहुत जरूरत है जैसे ही हम सब अपने परिवार कि महिलाओं के हक और अधिकार कि चिंता करते हैं वैसे ही समाज में सभी महिलाओं की चिंता करनी होगी तभी महिला सशक्तिकरण सही मायने में पूरा हो जाएगा।

## मेरी माँ

ज्योति यादव, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

वैसे तो दुनियाँ की सारी माँएँ एक सी हैं,  
पर मुझे मेरी माँ उनमें से भी लगती कुछ अलग सी है।

उन्होंने हर वक्त मुझे चाहा है,  
हार में संभाला और जीत को सराहा है।

खुशियों से लेकर गमों तक मैं वो मेरे साथ है,  
लगता वो मेरा दाहिना हाथ है।

मेरी खुशियों में उनकी आँखें डबडबाती है,  
तो गमों में वो जीजाबाई बनकर आती है।

हमारे लिए उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगाया है,  
पर बदले में कुछ लेने का खयाल भी ना आया है।  
हमें उदास देखकर वो अपना सब कुछ भूल जाती है  
लेकिन हमारे चेहरे की मुस्कान देखते ही खिलखिलाती है

हमारे सपनों को ही उन्होंने अपना सपना बनाया,  
फिर उनको पूरा करने के लिए रात को भी दिन बनाया।  
वो मेरी माँ है, दोस्त है और है एक सहेली,  
पर कभी-कभी लगती है वो एक अजीब सी पहेली।

उनकी दुनियाँ हमसे ही शुरू है और हम पर ही खत्म,  
हमारे लिए किया उन्होंने अपनी खुशियों को भी सितम।

हमें देख कर उनकी मुस्कान है खिलती है,  
क्योंकि हमारे अन्दर उनकी जान है बसती ।

हमारे जन्मदिनों पर तो दावत है खिलाई,  
पर अपना जन्मदिन वो याद ही ना रख पाई।

लोग कहते हैं कि माँ भगवान का रूप है,  
पर मैं तो कहती हूँ कि भगवान ही माँ का रूप है।



## इन्तज़ार

जी. लक्ष्मी, स. लेखाधिकारी

बचपन में  
था इन्तज़ार  
बड़ा होने का और  
कुछ बड़ा करने का।

दुनिया देखने का और  
दुनिया को दिखाने का।

जवानी में  
था इन्तज़ार  
जिन्दगी संवारने का और  
जीवन साथी के आने का  
घर परिवार बसाने का और  
ज़मीन जायदाद बढ़ाने का।

मध्य आयु आई  
तो था इन्तज़ार  
बच्चों की उन्नति का और  
कर्मक्षेत्र में प्रगति का  
बीमारियों से बचने का और  
बुढ़ापे की तैयारी का।

बुढ़ापा आया  
तो इन्तज़ार गहरा गया  
विदेशवासी बच्चों के दर्शन का और  
परिजनों का ध्यान पाने का  
दर्द और दवाइयों से छुटकारा पाने का  
या फिर मृत्यु के आने का।

कफन में भी  
इन्तज़ार ही था  
उस अगले जनम का  
चूँकि इस जनम को तो जिया नहीं  
जाना नहीं  
खुशियों को पहचाना नहीं





## सूचित करने के बजाए राय कायम करता मीडिया

सबिता साव, क. अनुवादक

स्पर्धा से भरे आज के यूह में प्रत्येक क्षेत्र में आगे निकलने की होड़ मची है। मीडिया में तो यह स्पर्धा अत्यंत प्रचंड है। गलाकाट स्पर्धा को देखते हुए मीडिया की भूमिका पर भी चर्चा अनिवार्य है। मीडिया अर्थात् माध्यम। मीडिया को लोकतंत्र का एक स्तम्भ माना गया है, इसी से मीडिया के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है। मीडिया का प्रमुख कार्य संवाद वहन है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, व्यक्तियों, संस्थाओं के बीच पुल का कार्य करता है। आधुनिक युग में मीडिया का अर्थ समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविज़न चैनलों के दायरे से बाहर निकाल गया है; इसमें इंटरनेट और सोशल साइट्स को भी शामिल किया जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मीडिया समाज का पुनर्निर्माण करता है।

इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने इसका उपयोग लोकपरिवर्तन के भरोसेमंद औज़ार के रूप में किया था। अंग्रेज़ों की दासता से सिसकते भारतीयों में देशभक्ति व उत्साह भरने में मीडिया ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। आज की बात कि जाए तो मीडिया के सामने बड़े से बड़े राजनेता, उद्योगपति अपना सर नवाते हैं। बच्चों को पोलियों की दवा पिलाने का अभियान हो या एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य, मीडिया ने अपनी भूमिका पूरी तरह से निभाई है। इसके अलावा बाल मजदूरी पर रोक लगाने के प्रयास करना, लोगों को वोट देने के लिए प्रेरित करना धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना जैसे अनेक कार्यों में मीडिया की भूमिका सराहनीय है। इन सब के साथ-साथ मीडिया समय-समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता रहता है। भ्रष्टाचारियों पर भी नजर रखता है और स्टींग ऑपरेशन कर इन सफेदपेशों का काला चेहरा दुनिया के सामने लाता है।

किन्तु जैसे फूल के साथ काँटे होते हैं, उसी प्रकार मीडिया भी वरदान ही नहीं अभिशाप भी हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जब सीमा लांघ जाती है तब वह उच्छृङ्खलता बन जाती है कुछ मीडिया साधन इसी तरफ उन्मुख हैं। आज इनकी वजह से मीडिया समझौते का स्तंभ बनता जा रहा है। आजकल एक अभियुक्त को दो मुकदमों का सामना करना पड़ता है- एक अदालत में और दूसरा अदालत के बाहर यानि 'मीडिया ट्रायल'। मीडिया द्वारा ट्रायल अब कोई विदेशी अवधारणा नहीं है। यह भारतीय समाज में बहु-प्रचलित है और कुछ हाई प्रोफाइल मामलों में मीडिया का हस्तक्षेप उभरकर सामने आता है जिसने अदालत के फैसले को भी प्रभावित किया है।

कई बार यह देखा गया है कि अदालत के फैसला सुनने से पूर्व ही मीडिया अपना फैसला सुनाकर एक पूर्व राय निर्मित कर चुका होता है। टी.वी. चैनल वाला मीडिया इससे चार कदम आगे है टी.वी. पर चैनलों की जैसे बाढ़ सी आई हुई है। हर किसी का ध्येय है ऊँची से ऊँची टी.आर.पी. अर्थात् अधिक से अधिक पैसा। इसने समाज में अनावश्यक फैशन, अश्लीलता जैसी घटनाओं में वृद्धि की है। इसके अलावा इंटरनेट ने असामाजिक क्रियाकलाप फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसके कारण असामाजिक क्रियाकलाप युवाओं तक पहुँच रहे हैं, जिससे उनमें नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की लगातार कमी आती जा रही है। आज समाचार पत्र अपराध की खबरों से भरे रहते हैं जब कि सकारात्मक सोच को स्थान ही नहीं मिलता। यदि मिलता भी है तो कहीं किसी कोने में।



सनसनी फैलाने के लिए तो ये देश की सुरक्षा को भी दाँव पर लगाने से नहीं चूकते। 26/11 को हम कैसे भूल सकते हैं जब बड़े से बड़े चैनलों पर पूरी कार्यवाही का सीधा-प्रसारण दिखाया गया जिससे होटल में घुसे आतंकवादी बाहर होने वाली हलचल से पूरी तरह वाकिफ़ होते रहे और हमारा अधिक से अधिक नुकसान करते रहे। मीडिया यदि अपने निहित स्वार्थों को भूलकर अपनी ज़िम्मेदारी अच्छे से निभाए तो समाज को एक दिशा प्रदान कर सकता है। मीडिया अपराध की खबरों को दिखाए पर सकारात्मक समाचारों को भी किनारा न करें। समाज में फैली बुराइयों के अलावा विकास को भी दिखाए ताकि आम जनता का हृदय निराशा में न डूबा रहे।

## जलती चिताओं के बीच फलती और फूलती जिंदगी

शिवजी कुमार पाण्डेय, लेखाकार

आरा बक्सर भोजपुर बिहार सेक्टर 52 रामरेखा छाह अलग थलग बना शमशान घाट दोपहर के करीब 12 बजे 30 साल के एक नौजवान का शव आया। लाश चबूतरे पर रखी गयी। पास ही बने गोदाम से कुछ लोग अच्छी लकड़ियाँ चुनने चले गए। 55 साल का एक बदहवाश बुजुर्ग हाथ में पत्तों का ढेर लिए अपने बेटे की लाश के चेहरे से मक्खियाँ उड़ाने लगा। नीड़ के पास पहुँचकर हमने क्रिया-क्रम कराने वाले मुकेश आचार्य के बारे में पूछा अपना नाम सुनते ही मुकेश भीड़ से निकलकर सामने आए, हमारे आने का कारण पूछा और जवाब सुनकर बरामदे में रखी खाट की तरफ इशारा करते हुये इंतजार करने के लिए कहा। शमशान परिसर में ही बने मुकेश के घर के बाहर इंतजार करते हुये कभी हम अंतिम क्रिया कराते हुए मुकेश को देखते तो कभी उनके परिवार को जो इस सब से बेपरवाह अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त था। जलते चिता से महज 40 फीट दूर मुकेश के तीन बच्चों रामा (15), नीतू (10) और श्याम (1) को खेलते देखना हैरान करने वाला था। इन बच्चों को उस अंतिम संस्कार की प्रक्रिया से कोई फर्क ही नहीं पड़ता था,

पहला सवाल रामा से ही, बेटा स्कूल जाते हो? जवाब हाँ में मिला। घर के अंदर मुकेश की पत्नी ज्योति खाना पका रही हैं, कुकुर की सीटी की आवाज बाहर के शोर शराबे को मंद कर रही हैं, आधा घंटा बीतने के बाद भी मुकेश अंतिम संस्कार के काम में व्यस्त हैं, इस बीच गीता बच्चों को देखने के लिए बाहर जाती हैं, हमने उनसे पूछा, जलती लाशों के बीच परिवार को डर नहीं लगता? चंद सेकंड खामोश रहकर गीता कहती है, यह सच है कि अंतिम संस्कार के अलावा ज्यादातर लोग यहाँ आने से घबराते हैं, लेकिन हमारा बचपन तो यही गुजरा। छोटे भाई का जन्म, बहनों की शादी फिर मेरे बच्चों का जन्म से लेकर तमाम सुख दुख हमने यही देखे हाइओन, मेरी शादी भी यही से हुई, पापा मम्मी ने आखिरी साँसे भी यहीं ली। इसलिए खास लगाव हो गया है। यहाँ रहने से नहीं बल्कि अब इस ख्याल से डर लगता है कि इस जगह को छोड़कर कहीं और जाना पड़ा तो।

क्या रिश्तेदार इस काम से खुश है? जवाब आता है, ज्यादातर तो हमारे काम को पसंद नहीं करते, वो कहते हैं कि उन्हें किसी को यह बताने में शर्म आती है कि उनके रिश्तेदार यानि कि हम शमशान में रहते हैं, कई संबंधी इसीलिए हमारे घर आना नहीं चाहते। एक घटना का जिक्र करते हुए गीता बताती है कि एक बार एक रिश्तेदार एक बेटे के साथ घर आए थे, बेटे ने उनसे पूछा कि पापा घर के सामने आग क्यों जल रही हैं? वो बेटे को नहीं बताना चाहते थे कहाँ आएँ हैं, कुछ देर बाद वह जल्दबाजी में हमारे घर से चले गए।

शमशान से जुड़ा एक ऐसा वाकिया जो की आप सुन सकते हैं एक दिन मेरा छोटा भाई शमशान के तरफ जहाँ मुर्दा जला हुआ था वहाँ जाकर वह राख से खेलने लगा। खेलते-खेलते वह



राख को खा लिया, तब मम्मी घर में काम कर रही थी। वह घुटने के बल पर वहाँ चला गया, पूरे शरीर में राख लगा दी। मम्मी ने उसे देखा तो दौड़ी और उसके पास पहुँची और फौरन उसके मुँह से राख निकाली। गीता बताती है, 'हम डोम नहीं हैं, जाती से ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है जो अंतिम संस्कार में पूजा पाठ कराते थे लेकिन 2015 में यहाँ पर ही बस गए अब अंतिम संस्कार में मदद करते हैं। यहाँ आने वाली डेड बॉडी को क्रिया-करम के बाद हम पर्ची बनाकर देते हैं, इसके आधार पर ही सरकारी दफ्तर से मृत्यु प्रमाण पत्र बनता है। हमारी रक्षा तो खुद शमशान वाले ही करते हैं। डेढ़ घंटे बाद क्रिया-करम खतम होते ही मुकेश सीधे हमारे पास आए। कुछ देर पहले जो सवाल उनकी पत्नी से किया था, वही उनसे किया कि क्या आपको डर नहीं लगता शमशान घाट पर, तो फिर वो ठहाके लगाकर ज़ोर से हँसने लगे, और कहने लगे-म 'डर कैसा? मेरा पूरा परिवार घर के अंदर सोता है, मैं यहाँ बरामदे में अकेला बाह बिछाकर सोता हूँ। हमारी रक्षा तो मसान बाबा करते हैं। ना मुझे और ना मेरे परिवार को कभी डर लगा, जिन चबूतरों पर लाशें जलती हैं, मेरे बच्चे उनके आसपास खेलते हैं। डर उनके मन में भी नहीं है। शमशान से घर आने के बाद लोग सबसे पहले नहाते हैं, क्या आप भी ऐसे करते हैं? इस सवाल के जवाब में मुकेश कहते हैं, हम तो सुबह उठकर नहाने ओर पूजा पाठ करने के बाद अपनी पानी की शुरुआत करते हैं, शमशान भी उतना ही पवित्र होता है, जितना कोई मंदिर। जैसे मेरे यहाँ कोई गाय पाली गयी है, सड़क के उस पार रहने वाला आदमी रोज हमसे दूध लेने आता है, लेकिन वह गेट के अंदर नहीं घुसता, कहता है कि शमशान के अंदर नहीं जाऊंगा, मैं उससे कहता हूँ कि तुम अंदर नहीं आते हो, लेकिन दूध तो अंदर से ही जा रहा है, कहने का अर्थ है की यहाँ आने जाने वाले का सबके अपने अपने नियम होते हैं।

मुकेश आगे बताते हैं, कई रिश्तेदारों को हमारे इस काम से दिक्कत है। कहते हैं तुम शमशान में रहते हो तुमसे बात नहीं करेंगे, लेकिन इसी तरह कोई भी यहाँ रहने को तैयार नहीं होगा तो इन लाशों का उद्धार कैसे होगा? मेरी तो शादी भी यहाँ से ही हुई है, तब से इधर ही रहता हूँ। समाज को देखकर अजीब लगता है। एक बार आडी कार से एक लड़का आया। उसके पिता को अग्नि देने के लिए दोस्त को साथ लाया था, कहने लगा डर लगता है मुझे आश्चर्य हुआ तो मैंने उससे पूछा जिस कार में आए हो, उसे किसने खरीदा था, उसने कहा पापा ने। मैंने कहा फिर तो इस कार को भी अपने दोस्त से आग के हवाले करवा दो। मुकेश और उनकी पत्नी से बात करने के बाद हम बक्सर के ही मोहल्ला में बने अंतिम निवास शमशान में पहले चारदीवारी नहीं थी, कोई पक्का मकान नहीं था, अक्सर आस पास के लोग यहाँ किसी शव का अंतिम संस्कार करते तो अगले दिन उन्हें लाश आड़ी तिरछी मिलती। आसपास मुर्गों के पंख, मांस, शराब और पूजा पाठ का सामान मिलता। परेशान होकर ढाई साल पहले हमें यहाँ बसाया गया अब अंतिम संस्कार कराने के साथ-साथ निगरानी भी करते हैं।

## मजदूर किसान

अनिल कुमार, लेखाकार

सुना है कि सत्ता तलवारों से चलती है और देश की सीमा जवानों से चलती है अगर यह सच है तो यह भी सत्य है कि जीवन मजदूर किसानों से ही चलता है। किसान वह होता है जो हर तरह के कठिन रास्तों को लाँघते फिरते हैं और मिट्टी कि खुशबू में चलते हैं। उनके पास हर समस्या का समाधान होता है यह बात वे खूब करते हैं और कभी भी हिम्मत नहीं हारते हैं। किसान वह होता है जो चाहे कितनी भी गर्मी हो कितना भी जाड़ा और पाला पड़ता हो वो उनको सहते रहते हैं। उनकी धोती फटी हुई रहती है और पैंरो में भी बिवाई कटी रहती है। फिर भी वह हर दर्द को सहन करते हैं। किसान वह होता है जो हमेशा कर्ज में दबे रहते हैं लेकिन फिर भी वे अपने काम को पूरी मेहनत और लगन से करते हैं। और वो अपने आपको कभी भी कमजोर और लाचार नहीं मानते हैं क्योंकि वे साहसी और हुनरमंद हैं और वे हमेशा दूसरों के लिए जीते हैं। किसान वह होता है जो न तो कोई होली न कोई दिवाली और न ही रमजान मनाते हैं, ये हमेशा ही अपना सबकुछ धरती को ही मानते हैं और धरतीपुत्र बनकर ही रहते हैं और मिट्टी के सपून कहलाते हैं। किसान वह होता है जो जैसे दूसरे लोग खुशी मनाते हैं तब उनकी तरह ही खुशी न मनाकर बल्कि दूसरों की खुशी के लिए हमेशा खेतों में ही खुशी ढूँढते फिरते हैं।



किसान वह है जो अपने गम को अमृत समझ कर उसे खेतों में पेड़ों की छांव में बैठकर पीते हैं और अपना दुख दर्द किसी के साथ भी सांझा नहीं करते हैं। किसान संवेदना की वह मूर्ति है जो कभी भी यह नहीं कहते हैं कि कौन अपना है कौन पराया है। वे सभी को अपना मानते हैं। यह कटु सत्य है कि संघर्षों में ही खुशहाली है और पसीने में ही लक्ष्य है क्योंकि किसान मानते हैं कि कोशिश और हिम्मत करने से सभी कठिनाइयों को पार किया जा सकता है और इस पर सभी को यकीन करना चाहिए। परिश्रम करते रहने से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। पतझड़ को देखकर कभी उदास न होना चाहिए बल्कि ये मानना चाहिए कि पतझड़ के बाद ही बहार आती है।

## नागपट्टिनम धर्मनिरपेक्षता की एक उत्कृष्ट मिशाल

विद्या जनार्दन, स. लेखाधिकारी

मेरा विवाह एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसका नागपट्टिनम में रहता है। यह तमिलनाडु राज्य का एक नगर है। इस शहर की विशिष्टता यह है कि यहाँ विविध धर्मों के लोग सद्भाव रहते हैं। कस्बे में एक मेहराब में तीन धर्मों हिंदू धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म के धार्मिक प्रतीक हैं। इस शहर में पूजा स्थलों का बहुत महत्व है। श्राइन वेलंकन्नी, सबसे बड़े कैथोलिक तीर्थस्थलों में से एक है। 'अवर लेडी ऑफ गुड हेल्थ' को समर्पित इस मंदिर की तीर्थ यात्रा पर विभिन्न धर्मों के लोग आते हैं। इसकी स्थापना सोलहवीं सदी में काही गई है। यहाँ वेलंकन्नी उत्सव विभिन्न भाषाओं में आयोजित किया जाता है जिसमें अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, हिंदी, कोंकणी, मराठी शामिल हैं। वेलंकन्नी उत्सव हर साल 29 अगस्त से 8 सितंबर तक मनाया जाता है।

नागौर दरगाह को सैयद शाहुल हमीद दरगाह या नागौर अंदावर के नाम से भी जाना जाता है जो सूफी संत शाहुल हमीद की कब्र है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने कई चमत्कार किए थे, उदाहरण के लिए उन्होंने 16वीं शताब्दी में तंजावुर के राजा अच्युथप्पा नायक की शारीरिक बीमारी को ठीक किया था। मान्यता है कि निसंतान इस दरगाह अरदास करते हैं तो संतान की प्राप्ति होती है। यह पूजा स्थल मुसलमानों तक ही सीमित नहीं है। अन्य धर्मों के लोग विशेष रूप से हिंदू बड़ी संख्या में इस स्थान पर आते हैं। सौंदरराजा पेरुमल मंदिर एक दिव्यदेशम है। पेरुमल का नाम देवता की सुंदरता और चमकदार त्वचा को दर्शाता है। मंदिर 3 त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है। दिन में 6 बार अनुष्ठान किया जाता है। देवी को सौंदरवल्ली के नाम से जाना जाता है। आदिशेष और नागाओं द्वारा देवताओं की पूजा की जाती थी इसलिए इस स्थान को नागपट्टिनम के नाम से जाना जाने लगा जो समय के साथ नागपट्टिनम बन गया। नीलायाथाक्षी-कायरोहनार मंदिर छठी शताब्दी ईस्वी में बना है। एक परंपरा के रूप में, भगवान अपने भक्त आदिबथार का सम्मान करने के लिए अवनी (अगस्त-सितंबर) के तमिल महीने में आयिलम तारे पर मछली पकड़ने जाते हैं। मछुआरा समुदाय के मृत लोगों को जब मंदिर के प्रवेश द्वार के पास लाया जाता है, तो उन्हें फूलों से सम्मानित किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि नेल्लुकदाईमारीअम्मन मंदिर का निर्माण देवता की इच्छा के अनुसार एक भक्त द्वारा किया गया था। यह मंदिर रथ और सेडिल उत्सव के लिए प्रसिद्ध है। आटा से बना दीपक जलाना और देवता को चावल का दलिया चढ़ाना इस मंदिर की कुछ प्रथागत प्रथाएँ हैं। भक्त देवी पर विश्वास करते हैं और उनकी पूजा करते हैं जो उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देती हैं और उनकी सभी इच्छाओं को पूरा करती हैं। यह दिलचस्प है कि नागपट्टिनम में एक चौथा धर्म बौद्ध धर्म भी प्रचलित है। चूडामणि विहार एक बौद्ध विहार का निर्माण 11वीं शताब्दी में नागापट्टिनम में किया गया था।



## चोल वंश

शशिकान्त कुमार लेखाकार

भारत के प्राचीन राजवंशों में एक निषाद हिन्दू राजवंश था। चोल राजवंश दक्षिण भारत (तमिलनाडू) में और पास के अन्य देशों में तमिल चोल शासकों ने 9वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के बीच एक अत्यंत शक्तिशाली हिन्दू साम्राज्य का निर्माण किया।

चोल शब्द की व्युत्पत्ति विभिन्न प्रकार से की जाती रही है। कर्नल जेरिनो के शब्दों में चोल शब्द को संस्कृत में “काल” एवं “कोल” से संबंध करते हुए इसे दक्षिण भारत के कृष्णवर्ण आर्य समुदाय का सूचक माना जाता है। चोल शब्द को संस्कृत में “चोर” तथा तमिल में “चोलम” भी कहा गया है। किन्तु इनमें से कोई भी मत ठीक नहीं है। आरंभिक काल से ही चोल शब्द का प्रयोग इसी नाम के राजवंशों द्वारा शासित प्रजा और भू-भाग के लिए उपयोग होता रहा है। संगमयुगीन मणिमेवले में चोलों को सूर्यवंशी कहा है। चोलों के अनेक प्रचलित नामों में शेबियन भी है। शेबियन के आधार पर उन्हें शिदि से अद्भुत सिद्ध कहते हैं। 12वीं सदी के अनेक स्थानीय राजवंश अपने को करिकाल से उद्भूत कश्यप गोत्रीय बताते हैं।



चोलों के उल्लेख अत्यंत प्राचीन काल से ही प्राप्त होने लगते हैं। कात्यायन ने चोलो (चोड़ो) का उल्लेख किया है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका उल्लेख उपलब्ध है। किन्तु इन्होंने संगमयुग में ही दक्षिण भारतीय इतिहास को संभवतः प्रथम बार प्रभावित किया। संगमकाल के अनेक महत्वपूर्ण चोल सम्राटों में करिकाल अत्यधिक प्रसिद्ध हुए संगमयुग के पश्चात का चोल इतिहास अज्ञात है। फिर भी चोल वंश-परंपरा पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई थी क्योंकि रेंडू (जिला कडया) प्रदेश में चोल पल्लवों, चालुक्यों तथा राष्ट्रकूटों के अधीन शासन करते रहे।

चोल वंश का उदय-

लगभग नवीं सदी के मध्य में चोल वंश का पुनरुत्थान हुआ। इस चोल वंश का संस्थापक विजयालया (850-870-71 ईसवी) पल्लव अधीनता में उरैयुर प्रदेश का शासक था। विजयालया की

वंश परंपरा में लगभग 20 राजा हुए, जिन्होंने कुल मिलकर चार सौ से अधिक वर्षों तक शासन किया। विजयालय के पश्चात आदित्य प्रथम (811-907), प्रांतक प्रथम (907-955) ने क्रमशः शासन किया। प्रांतक प्रथम ने पांडित्य-सिंहल नरेशों की सम्मिलित शक्ति को, पल्लवों, बाणों, बेण्डुबों, के अतिरिक्त राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय को भी पराजित किया। चोल शक्ति एवं साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक प्रांतक ही था। उसने लंकापति उदय (945-53) के समय सिंहल पर भी एक असफल आक्रमण किया। प्रांतक अपने अंतिम दिनों में राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृतीय द्वारा 949 ईसवी में बड़ी बुरी तरह पराजित हुआ। इस पराजय के फलस्वरूप चोल साम्राज्य की नींव हिल गयी। प्रांतक प्रथम के बाद के 32 वर्षों में अनेक चोल राजाओं ने शासन किया। इनमें गंडादित्य, अरिंजय और सुंदर चोल या प्रांतक द्वितीय प्रमुख थे।

इसके पश्चात राजराज प्रथम (985-1014) ने चोल वंश की प्रसारनीति को आगे बढ़ते हुए अपनी अनेक विजयों के द्वारा अपने वंश की मर्यादा को पुनः प्रतिकृत किया। उसने सर्वप्रथम पश्चिमी गंगों को पराजित कर उनका प्रदेश छीन लिया। उसके बाद पश्चिमी चालुक्यों से उनका दीर्घकालिक परिणामहीन युद्ध आरंभ हुआ। उन्होंने केरल नरेश को पराजित किया। पांड्यो को पराजित कर मदुरई और कुर्ग में स्थित उदे अधिकृत कर लिया। यही नहीं, राजराज ने सिंहल पर आक्रमण करके उसके उत्तरी प्रदेशों को अपने राज्य में मिला लिया।

राजराज के पश्चात उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम (1012-1044) सिंहासन पर बैठे। राजेंद्र प्रथम भी अत्यंत शक्तिशाली सम्राट थे। राजेंद्र ने चेर, पाण्ड्य एवं सिंहल जीता तथा उन्हें अपने राज्य में मिला लिया। उन्होंने पश्चिमी चालुक्यों को कई युद्धों में पराजित किया, उनकी राजधानी को ध्वस्त किया किन्तु उनपर पूर्ण विजय न प्राप्त कर सके। राजेंद्र के दो अन्य सैनिक अभियान अत्यंत उल्लेखनीय हैं। उनका प्रथम सैनिक अभियान पूर्वी समुद्रतट से कलिंग, उड़ीसा, दक्षिण कोशल आदि के राजाओं को पराजित करता हुआ बंगाल के विरुद्ध हुआ। उन्होंने पश्चिम एवं दक्षिण बंगाल के तीन छोटे राजाओं को पराजित करने के साथ-साथ शक्तिशाली पाल राजा महिपाल को भी पराजित किया। इस अभियान का कारण अभिलेखों के अनुसार गंगाजल प्राप्त करना था। इससे यह भी ज्ञात होता है कि पराजित राजाओं को यह जल अपने सिरों पर ढोना पड़ा था। किन्तु यह मात्र आक्रमण था, इससे चोल साम्राज्य की सीमाओं पर कोई असर नहीं पड़ा।

राजेंद्र का दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण मलयद्वीप, जावा और सुमात्रा के शैलेंद्र शासन के विरुद्ध हुआ। यह पूर्ण रूप से नौसैनिक आक्रमण था। शैलेंद्र सम्राटों का राजराज से मैत्रीपूर्ण व्यवहार था, किन्तु राजेंद्र के साथ उनकी शत्रुता का कारण अज्ञात है। राजेंद्र को इसमें संप्रभुता मिली। राजराज की भाँति राजेंद्र ने भी एक राजदूत चीन भेजा। राजाधिराज प्रथम (1018-1054) राजेंद्र का उत्तराधिकारी था। उसका अधिकांश समय विद्रोहों के शमन में लगा। आरंभ में उसने अनेक छोटे-छोटे राज्यों, तथा चेर, पाण्ड्य एवं सिंहल के विद्रोहों का दमन किया। अभ्यंतर इसके चालुक्य

सोमेश्वर से हुए कोप्पम के युद्ध में उसकी मृत्यु हुई। युद्धक्षेत्र में ही राजेंद्र द्वितीय (1052-1064) अभिषिक्त हुए।

कुलोतुंग प्रथम (1070-1120) पूर्वी चालुक्य सम्राट राजराज का पुत्र था। कुलोतुंग की माँ एवं मातामही क्रमशः राजेंद्र (प्रथम) चोल तथा राजराज प्रथम की पुत्रियाँ थी। कुलोतुंग प्रथम स्वयं राजेंद्र द्वितीय की पुत्री से विवाहित था। कुलोतुंग ने अपने विपक्ष एवं अधिराजेन्द्र के पक्ष से समस्त विद्रोह का दमन करके अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। अपने विस्तृत शासनकाल में उसने अधिराजेन्द्र के हिमानयंती एवं बहनोई चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य के अनेक आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना किया। सिंहल फिर भी स्वतंत्र हो ही गया। युवराज विक्रम चोल के प्रयास से कलिंग का दक्षिण प्रदेश कुलोतुंग के राज्य में मिला लिया गया। कुलोतुंग ने अपने अंतिम दिनों तक सिंहल के अतिरिक्त प्रायः सम्पूर्ण चोल साम्राज्य तथा दक्षिणी कलिंग प्रदेश पर शासन किया। उसने एक राजदूत भी चीन भेजा। विक्रम चोल (1118-1133) कुलोतुंग का उत्तराधिकारी हुआ। लगभग 1118 में विक्रमादित्य छठे ने वेंगी चोलों से छीन ली। होयसभों ने भी चोलों को कावेरी के पार भगा दिया और मैसूर प्रदेश को अधिकृत कर लिया। राजेंद्र तृतीय चोल वंश का अंतिम शासक (राजा) (1246-1279) था। आरंभ में राजेंद्र को पांड्यो के विरुद्ध आंशिक सफलता मिली, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है की तेलुगु-चोल साम्राज्य पर गंडगोपाल तिव्क राजराज तृतीय की नाममात्र की अधीनता में शासन कर रहा था। गणपती काकतिया के कांची आक्रमण के पश्चात तिव्क ने उसी की अधीनता स्वीकार कर ली। अंततः जटावर्मन सुंदर पांड्य ने उत्तर पर आक्रमण किया और चोलों को पराजित किया। इसके बाद से चोल शासक पांड्यों के अधीन रहे और उनकी यह स्थिति भी 1310 में मलिक काफुर के आक्रमण से समाप्त हो गयी।

चोल वंश की शासन व्यवस्था-

चोलों के अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि उनका शासन सुसंगठित था। राज्य का सबसे बड़ा अधिकारी राजा मंत्रियों एवं राज्याधिकारियों की सलाह से शासन करता था। शासन सुविधा की दृष्टि से सारा राज्य अनेक मंडलों में विभक्त था। मण्डल कोट्टम या बलनाडुओं में बाँटे होते थे। इसके बाद की शासकीय परंपरा में नाडु (जिला), कुररम (ग्रामसमुह) थे। चोल राज्यकाल में इनका शासन जनसभाओं द्वारा होता था। चोल ग्रामसभाएँ “उर” या “सभा” कही जाती थी। इसके सदस्य सभी ग्रामनिवासी होते थे। सभा की कार्यकारिणी परिषद (आडुगणम) का चुनाव ये लोग अपने में से करते थे। उत्तर मेरुर से प्राप्त अभिलेख से उस ग्रामसभा के कार्यों आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। उत्तरमेरुर ग्रामशासन सभा की पाँच उपसमितियों द्वारा होता था। इनके सदस्य अवैतनिक थे एवं उनका कार्यकाल केवल वर्ष भर का होता था। ये अपने शासन के लिए स्वतंत्र थीं उनकी कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता था।





चोल शासक प्रसिद्ध भवन-निर्माता थे। सिंचाई की व्यवस्था, राजभागों के निर्माण आदि के अतिरिक्त उन्होंने नगरों एवं विशाल मंदिर तंजौर में बनवाया। यह प्राचीन भारतीय मंदिरों में सबसे अधिक ऊँचा एवं बड़ा है। तंजौर के मंदिर की दीवारों पर अंकित चित्र उल्लेखनीय एवं बड़े महत्वपूर्ण हैं। राजेंद्र प्रथम ने अपने द्वारा निर्मित नगर गंगकोडपुरम (त्रिचनापल्ली) में इस प्रकार के एक अन्य विशाल मंदिर का निर्माण कराया। चोलों के राज्यकाल में मूर्तिकला का प्रभूत विकास हुआ। इस काल की पाषाण एवं धातुमूर्तियाँ अत्यंत सजीव एवं कलात्मक हैं।

चोल शासन के अंतर्गत साहित्य की भी बड़ी उन्नति हुई। इस काल के सबसे बड़े कवि कंबन थे। इन्होंने तमिल “रामायण” की रचना कुलोतुंग तृतीय के शासनकाल में की थी। इसके अतिरिक्त व्याकरण, को, काव्यशास्त्र तथा छन्द आदि विषयों पर बहुत से महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना भी इसी समय हुई।

**चोल वंश की सांस्कृतिक स्थिति-**

चोल साम्राज्य की शक्ति बढ़ने के साथ ही सम्राट के गौरव और ऐश्वर्य के भव्य प्रदर्शन के कार्य बढ़ गए थे। राजभवन, उसमें सेवकों का प्रबंध और दरबार में उत्सवों और अनुष्ठानों में यह प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। सम्राट अपने जीवनकाल में ही युवराज को शासन प्रबंधन में अपने साथ सम्मिलित कर लेते थे। सम्राट के पास उसकी मौखिक आज्ञा का विषय भी एक सुनिश्चित प्रणाली के द्वारा आता था, एक सुनिश्चित विधि में ही यह कार्य रूप में परिणत होता था।

चोल शासक की प्रमुख विशेषता उनका सुसंगठित नौकरशाही के साथ उच्च कोटी की कुशलतावादी स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं का सुंदर और सफल सामंजस्य था। स्थानीय जीवन के विभिन्न अंगों के लिए विविध सामूहिक संस्थाएँ थी जो परस्पर सहयोग से कार्य करती थीं। नगरम उन स्थानों की सभाएं थी जहाँ व्यापारी वर्ग प्रमुख था। ऊँर गाँव के उन सभी व्यक्तियों की सभा भी जिसके पास भूमि थी।

चोल नरेशों (राजाओं) ने सिंचाई की सुविधा के लिए कुएँ और तलाब खुदवाएँ और नदियों के प्रवाह को रोककर पत्थर के बाँध से घिरे जलाशय (डैम) बनवाए। करिकाल चोल ने कावेरी नदी

पर बाँध बनवाया था। राजेंद्र प्रथम ने गंगेकोड-चोलपुरम के समीप एक झील बनवाया खुदवाई जिसका बाँध 16 मील लंबा था। इसको दो नदियों के जल से भरने की व्यवस्था की गयी और सिंचाई के लिए इसका उपयोग करने के लिए पत्थर की प्रणालियाँ और नहरें बनाई गयी। आवागमन की सुविधा के लिए प्रशस्त राजपथ और नदियों पर घाट भी निर्मित किए गए थे।

चोल वंश का सामाजिक जीवन-

सामाजिक वर्ग दो भागों में विभक्त थे- लंगे और डंगे। स्त्रियों पर सामाजिक जीवन में किसी भी प्रकार का परतिबंध नहीं था। वे संपत्ति की स्वामिनी होती थी। उच्च वर्ग के पुरुष बहुविवाह करते थे। सती प्रथा का प्रचार था। मंदिरों में गुनशीला देवदासियाँ रहा करती थी। समाज में दासप्रथा प्रचलित थी। दासों की कई कोटियाँ होती थी।

सामाजिक जीवन में यद्यपि ब्राह्मणों को अधिक अधिकार प्राप्त थे और अन्य वर्गों से अपना पार्थक्य दिखलाने के लिए उन्होंने अपने अलग बस्तियाँ बसानी शुरू कर दी थी, फिर भी विभिन्न वर्गों के लोग एक दूसरे से मेल-मिलाप कर रहा करते थे। सामाजिक व्यवस्था को धर्मशास्त्रों के आदेशों और आदेशों के अनुकूल रखने का प्रयत्न होता था।

चोल वंश का आर्थिक जीवन-

चोल वंश का आर्थिक जीवन कृषि पर आधारित था। भूमिका स्वामी(स्वामित्व) समाज में सम्मान की बात थी। कृषि के साथ ही पशुपालन का व्यवसाय भी प्रमुख था। स्वर्णकार, धातुकार और जुलाहों की कला उन्नत दशा में थी। व्यापारियों की अनेक श्रेणियाँ थी, जिनका संगठन विस्तृत क्षेत्र में कार्य करता था। नानादेश- तिशैयायिरतू एज्जुरुंवर व्यापारियों की एक विशाल श्रेणी थी जो बर्मा और सुमात्रा तक व्यापार करती थी।

चोल सम्राट शिव के उपासक थे लेकिन उनकी नीति धार्मिक सहिष्णुता की थी। उन्होंने बौद्धों को भी दान दिया। जैन भी शांतिपूर्वक अपने धर्म का पालन और प्रचार करते थे। पुर्वयुग के तमिल धार्मिक पद वेदों जैसे पूजित होने लगे और उनके स्वायत्त देवता स्वरूप माने जाने लगे। चोलों के मंदिरों की विशेषता उनके विमानों और प्रागणों में दिखलाई पड़ती है। प्रारंभिक चोल मंदिर साधारण योजना की कृतियाँ हैं लेकिन साम्राज्य की शक्ति और साधनों की वृद्धि के साथ मंदिरों के आकार और प्रभाव में भी परिवर्तन हुआ। इन मंदिरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रभावोत्पादक राजराज प्रथम द्वारा तंजोर में निर्मित राजराजेश्वर मंदिर राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगेकोडचोलपुरम में गंगेकोडचोलेश्वर मंदिर है। चोल युग में अपनी कांस्य प्रतिमाओं की सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। इनमें नटराज की मूर्तियाँ सर्वोत्कृष्ट हैं। तमिल साहित्य के इतिहास में चोल शासनकाल को स्वर्णयुग की संज्ञा दी जाती है।

## दोस्ती का रिश्ता

ज्योति यादव, क.अ.

क्या दोस्ती का मतलब दुखाना है दिल को  
या फिर महकाना है मन को।

क्या दोस्त का मतलब सताना है एक दूसरे को  
या फिर हंसाना है एक दूसरे को।

क्या दोस्ती में तोड़ा जाता है वादों को  
या फिर जान देकर निभाया जाता है वादों को।

क्या दोस्त बन जाते हैं अपने आप  
या फिर उन्हें कहीं से खोज कर लाते हैं आप।

क्या दोस्ती में बनाया जाता है विश्वास  
या फिर चकनाचूर किया जाता है विश्वास।

क्या दोस्ती का मतलब ठुकराना है  
या फिर दिल से अपनाना है।

क्या दोस्ती का मतलब प्यार है  
या फिर एतबार है।

क्या दोस्त बाँटते हैं गमों को  
या फिर छीन ले जाते हैं खुशियों को।

क्या दोस्ती होती है जीवन में एक बार  
या फिर चाहे इसे कर लो हजारों बार।  
आखिर समझ नहीं आता क्या है दोस्ती  
और क्या है सच्चे दोस्त का मतलब ???

रिश्तों में वो बात नहीं रही

शैलेन्द्र कुमार, लेखाकार

रिश्तों में वो पहली वाली बात नहीं रही,  
दिल में संजो ले ऐसी सौगात नहीं रही,  
मोहब्बत विज्ञापन या प्रोडक्ट बन गई है,  
दीवाना कर दे ऐसी मुलाकात नहीं रही।

बेतहशा जाने कहां भागे जा रहा इंसान,  
करने हासिल जाने कौन सा जहान,  
वक्त नहीं है दो घड़ी मोहब्बत के लिये,  
जाने कैसी हो गई है इंसान की चलन।

बस होड़ में गुजर जाती है पूरी जिंदगी,  
वो भावनाएं न रही जिसकी करे बंदगी,  
ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा की हो गई है इंतहां  
एक उलझन सी लगने लगी अब जिंदगी।

एक जगह ठहर कर दो पल हँस ले जरा,  
बाँट ले दो पल संग किसी के खुशियों भरा,  
बीते जो पल मिले न मिले फिर दोबारा,  
रखना सहेज के दिल में पल ये जादू भरा।





दोस्त ना जाने कहाँ गुम हो गया

शिवजी पाण्डेय, लेखाकार

मेरा दोस्त ना जाने कहाँ खो गया

बचपन में मेरे साथ खेलता था, जो दोस्ती निभाने का वादा करता था  
जो दोस्त नहीं भाई बोला करता था, न जाने कहाँ गया वो।



जो बारिश बाग बगीचे में  
मेरे साथ घूमा करता था  
न जाने वो दोस्त कहाँ गुम हो गया।

जो दोस्त हमेशा बारिश में  
मेरे साथ भीगा करता था  
वो गाँव की गलियों में मेरे साथ  
गुल्ली डंडा खेला करता था  
न जाने कहाँ खो गया।

दोस्ती प्यारी अनमोल है  
नहीं तोल सकता तराजू पर  
नहीं तोल सकता धन से  
सच्ची दोस्ती जिसके पास है  
उसके पास खुशियों की भरमार है  
ऐसा बोला करता था वो  
न जाने वो दोस्त कहाँ गुम हो गया।

आज शाम हुई उधर कल जाना है  
कहने पर भी वो कब माना है  
जो सदा जाना पहचाना है  
न जाने कहाँ गया वो।  
वो यारी याद आती है वो याराना याद आता है  
न जाने वो दोस्त कहाँ गुम हो गया।

## नौकरी

शिवजी पाण्डेय, लेखाकार

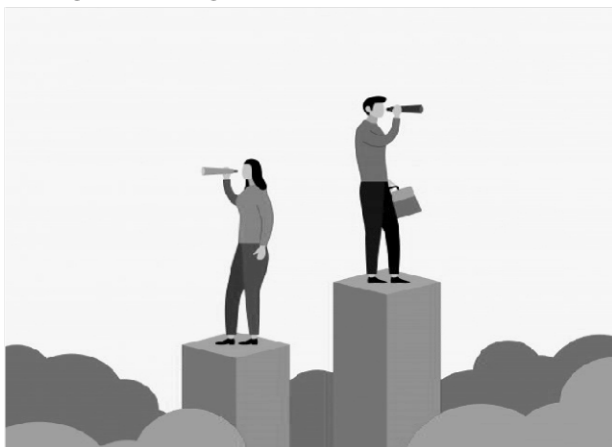
बड़ा ख्वाब है तू ऐ नौकरी!  
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।  
सुख चैन खोकर चटाई पर सोकर  
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं।

दिन में रागी और रात को मैगी  
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं।  
अंजान शहर में छोटा सस्ता कमरा लेकर  
रसोई, बैडरूम सब उसी में सहेजकर।  
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप और  
रिश्तों से दूर रहते हैं।

राशन की गठरी सिर पे उठाये  
अपनी मायूसी और मजबूरियाँ खुद ही छुपाये।  
खचाखच भरी ट्रेन में भी टिकिट लेके  
जान का जोखिम लेकर आज सफर करते हैं।

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।  
इंटरनेट अखबारों में तुझको तलाशते  
तेरे लिए पत्र पत्रिकाएँ पढ़ते पढ़ते।  
चालीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते हैं।

तू कितनी हसीन है ऐ नौकरी  
सारे युवा आज तुझको ही जीते हैं  
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।



## नौकरी ही मंजिल

सबिता साव, क. अ.

न जाने कितने संघर्षों के बाद  
ये मंजिल पायी है मैंने  
जिसे कभी नींद थी प्यारी  
इसे पाने के लिए  
कितने रात गँवायी है मैंने॥

जिसे पाने के लिए रात-दिन  
ख्वाब देखे थे,  
जिसे अपनी आँखों में संजोया था मैंने  
आज वो हुए पूरे।

पिता की चाहत और माँ की दुआ रंग लायी है  
न जाने कितने संघर्षों के बाद  
ये मंजिल पायी है मैंने।

तु न जाने तुझे पाने के लिए  
लोगों के कितने ताने सुने  
और जमाने के की ताकत लगाई हैं मैंने  
अंधेरी रातों के बाद एक नयी सुबह पाई है मैंने।

ये अपने साथ अनगिनत खुशियाँ लायी है  
न जाने कितने संघर्षों के बाद  
ये मंजिल पायी है मैंने।

## सच्ची मित्रता

मीना पी.जे. एक्का, व. लेखाधिकारी

सच्ची मित्रता दुनिया की सबसे मूल्यवान चीजों में एक है। ये जिसे मिल जाए उसका जीवन संवर जाए। आज के दौर में लोग मित्रता भी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही करते हैं और कार्य हो जाने के उपरांत अपने जीवन में व्यस्त हो जाते हैं अतः मित्र का चुनाव हमेशा सोच समझ कर ही करना चाहिए। दोस्ती जीवन के किसी भी पड़ाव में आकर तथा किसी से भी हो सकती है। पिता और पुत्री एक दूसरे के मित्र हो सकते हैं, माँ बेटे में दोस्तों हो सकती है। अमीर और गरीब में हो सकती है। यहाँ तक की इंसान एवं जानवर में भी दोस्ती सम्भव है। जैसा हमने बल्लू मोगली बल्लू और बघीरा की दोस्ती देखी है। ऐसे ही खास दोस्त थे मेरे... मेरे पैंसी और पैंथर, कहने को तो पैंसी एक चार पैरों वाली एक बाक्सर थी, पर वो एक ऐसी दोस्त थी जिसके आने से जिंदगी खुशहाल एवं रोचक हो गई थी। मेरे शांत जिंदगी में जैसे अचानक ही हलचल सी मच गई थी।



नौकरी के सिलसिले में अपने घर से मीलों दूर चेन्नई में एक किराए के मकान में मैं अकेले ही रहा करती थी। ऑफिस का समय तो बीत जात पर शाम को घर पर कुछ खाली खाली सा लगता। आस पड़ोस के लोगों से रिश्ते अच्छे थे। बात विचार भी होती रहती पर फिर भी कहीं न कहीं जिंदगी में कुछ कमी सी थी जो मुझे परेशान कर रही थी। ऐसे में एक दिन मेरे मन में घर पर एक पालतु जानवर रखने का ख्याल आया। घरवालों एवं मित्रों की सहायता से और कई महीनों तक शहर के कई गलियों एवं कोनों में ढूँढने के बाद मेरी तालाश टोलगेट के पास एक छोटे से मकान में आकर खत्म हुई जब मैंने पहली बार उस नन्हीं सी जान को देखा। उसकी बड़ी-बड़ी शरारती आँखों ने जाने क्या कहा, पर ऐसा लगा जैसे मुझे, जिसकी तलाश थी वह मुझे मिल चुकी है। उसकी जन्म देने वाली माँ की नजरों से बचाते हुए जब मैंने पहली बार उसे अपनी गोद में उठाया तो ऐसा लगा कि जैसे मैं फिर से बचपन में चली गई थी। उसके साथ वैसे ही खेलने लगी जैसे छोटे बच्चे अक्सर इन प्यारे जानवरों के साथ खेलते हैं।



अगले ही दिन मैं पैन्सी को अपने घर ले आई। शनिवार का दिन था और ऑफिस की छुट्टी भी। उसके साथ वो पहला दिन भूले नहीं भुलाया जा सकता मुझसे। उसके आने से घर में रौनक आ गई थी। एक डेढ़ महीने की नन्ही बॉक्सर ने अपने 4 नन्हें कदमों से घर का मुआयना किया उसे भी जैसे उसका नया घर पसंद था। उसकी चमकती आँखों ने और उसके हिलते हुए छोटे पूँछ ने उसके दिल का हाल मुझ तक पहुँचा दिया। मैंने अपने शयनकक्ष के एक कोने में एक कार्टन के डब्बे में उसके सोने का इन्तजाम किया था। दिसम्बर के महीने में हुए हल्की बारिश से ज्यादातर गर्म रहनेवाले इस शहर में भी थोड़ी सर्दी महसूस हो रही थी। इसलिए उसे गर्म रखने के लिए मैंने एक छोटा कम्बल उस कार्टन में डाल रखा था। लेकिन उसे मेरी गोद में ही सुकून की नींद मिलती। जैसे ही उसे उसके डब्बे में डाल दिया जाता वह जोर-जोर से चिल्ला-चिल्ला कर रोती। इससे पास पड़ोस के लोगों तक भी ये संदेश जा पहुँचा कि हमारे घर में एक नया सदस्य आया है। सभी उसकी झलक पाने को दौड़ गए। छोटे बच्चों में तो जैसे हर्षो-उल्लास की लहर दौड़ पड़ी। मेरी चिंता कि कहीं पास-पड़ोस के लोगों को इससे आपत्ति होगी, अब जा चुकी थी। हम सभी ने उस दिन को किसी त्योहार की तरह मनाया। कुछ ही दिनों में पैन्सी हमारी जिंदगी का एक अभिन्न अंग बन गई। कैम्पस में सभी को उसे सुबह-शाम छत पर घुमाना अच्छा लगता था। बच्चे उसे बाँय बोले बगैर स्कूल के लिए रवाना नहीं होते। और शाम को भी कुछ वक्त उसके साथ बिताते। उसे दूध में भिगोए बिस्कुट खाने में बहुत पसंद था। हम सभी बारी-बारी उसे खिलाया करते थे। रात में उसे मेरी छाती पर सोने में बड़ा मजा आता था। नीचे रखने से वह थोड़ी बेचैन हो जाती। ऐसा लग रहा था जैसे एक बेपरवाह लड़की से अचानक ही एक माँ बन गई हूँ। पैन्सी की हर तरह से देखभाल करती... उसे समय पर खाना देना, उसकी साफ सफाई का एवं वैक्सीन का ध्यान रखना कभी नहीं भूलती।

वक्त तेज़ी से बीतने लगा लेकिन इस बीच मुझे ये महसूस हुआ कि अगर मेरी गैर हाजरी में उसके पास उसी के जैसा एक दोस्त होता तो अच्छा था क्योंकि सुबह और शाम का वक्त तो पैन्सी के लिए अच्छा बीतता पर दिनभर वह घर पर बिल्कुल अकेली होती। ऑफिस घर के करीब होने की वजह से दोपहर में उसे खाना खिलाने जाया करती पर तुरंत वापस दफ्तर को लौट जाती। अब मेरी तालाश फिर शुरू हुई। पैन्सी के जैसा ही कोई दोस्त की तालाश...जल्द ही ऊपरवाले ने मेरी मन्नत कुबूल कर ली और हमारी जिंदगी में शामिल हुआ पैंथर। वह भी एक बाक्सर था। उसकी उम्र लगभग पैन्सी की उम्र जितनी ही थी। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मासूमियत झलकती पर साथ ही साथ शरारत की भी अपनी झलक दिखा जाती। उसका मजबूत शरीर और सारे शरीर पर चीते की तरह भूरी एवं काली धारियाँ से आँख हटाना मुश्किल था। पैन्सी के मन में खुशी भी थी और जलन भी। वह पैंथर को मेरे पास नहीं आने देती। सारा दुलार पर जैसे सिर्फ उसी का हक था। कुछ ही दिनों में दोनों की अच्छी दोस्ती हो गई और मेरी चिंता थोड़ी शांत हुई। अब उनके साथ न

सिर्फ मेरा बल्कि पड़ोसियों का भी अच्छा वक्त गुजर रहा था। ये दोनों न सिर्फ मेरे अकेलेपन का सहारा थे, बल्कि मुझे सुरक्षित भी महसूस कराते।

एक दिन गाँव से फोन आया कि हमारे गाँव के घर पर जो ऐलशेशियन हमने पाला था, उसका देहांत हो गया है। भैया भी नौकरी के सिलसिले में बाहर रहा करते थे और माता पिता की तन्हाई का साथी अकेला वही था। माँ अपने पालतु को खो कर दुखी रहती थी। हमेशा पैंसी और पैंथर के भौंकने की आवाज सुनने के लिए फोन किया करती। मुझे तो जैसे वो भूल ही गई थी। अब मुझे ऐसा महसूस हो चला था कि मुझसे ज्यादा पैंसी और पैंथर की जरूरत अब मेरी माँ को थी। बहुत ही भारी मन से मैंने दोनों को अपने माता-पिता के घर छोड़ने का फैसला किया। सफर की शुरुआत में तो दोनों ऐसे चहक रहे थे जैसे छोटे बच्चे घूमने जाते वक्त होते हैं। गाँव तक की वो दो दिनों की रेल यात्रा मैंने जागते ही काटी। सहयात्री अच्छे थे इसलिए बास्केट में बंद दोनों को अपने साथ रखने में कोई खास परेशानी नहीं आई। गाँव में नए लोगों के बीच में दोनों ने तुरंत ही गाँव में अपनी जगह बना ली। नए खिलौने मिलने से उनमें नई जोश एवं उल्लास की लहर दौड़ गई। वे अपने नए खिलौनों के साथ पूरे बगीचे में दौड़ लगाते फिरते। उनके रहने से माँ के चेहरे पर खुशी साफ दिखाई पड़ती थी। कैम्पस भी महफूस लगने लगा था। कहने को तो हमारे नन्हे सिपाही तीन-साढ़े तीन महीने के ही हुए थे पर उनसे बाहर के लोगों को घर की चारदीवारी के अंदर आने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता। उनके भौंकने की आवाज़ से ही वे सहम जाते।

अब आई उन्हें थोड़ी ट्रेनिंग देने की बारी। हमने परिचित वेटनरी डॉक्टर से संपर्क कर उनके लिए एक ट्रेनर की व्यवस्था की। क्लास के दौरान उनकी हरकतें देखते ही बनती थीं। एक तरफ पैंथर एक आज्ञाकारी छात्र बना हुआ था और दूसरी और पैंसी एक हठी बात ना मानने वाली। लेकिन मूड अच्छी होने पर दोनों के करतबों को देखने का एक अलग ही मजा था। उनकी ट्रेनिंग लंबी चलने वाली थी; लेकिन मेरी छुट्टियाँ समाप्ति पर थी और मैंने वापसी के लिए अपनी पैकिंग शुरू की अब पैंसी और पैंथर को भी ये बात समझ आ चुकी थी कि उन्हें वहीं गाँव में माता-पिता के साथ रहना है। हमेशा शरारत से भरे चेहरे कुछ पल के लिए गम्भीर हो गए थे। मैंने प्यार से उन पर हाथ फेरते हुए उन्हें समझाया कि मेरी गैरहाजरी में उन्हें वहाँ सब का खयाल रखना है। उनके चेहरे के भावों को देखकर ऐसा लगता है। जैसे वो मेरी बातों को और भावनाओं को अच्छी तरह से समझ पा रहे थे। इस बार घर से यात्रा की शुरुआत मेरे लिए बहुत ही ज्यादा मुश्किल था। जितना सोचा था उससे कहीं ज्यादा! दिल पर पत्थर रख, जल्दी वापस आने की आस देकर, भीगी पलके लिए वहाँ से अपने कार्यस्थल की ओर रवाना हुई।

वो डेढ़ महीने की पूरी यात्रा एक-एक याद उनके साथ बिताए आँखों के सामने घूम रही थी। पूरी यात्रा उनकी तस्वीरों को देखती रही। घर पहुँच कर ऐसा लगा जैसे बिल्कुल खाली हो चुका हो। ये सूनापन तो पैंसी और पैंथर के घर आने से पहले के सूनेपन से कहीं ज्यादा दर्द देनेवाला था।

इन चंद दिनों में इन दोनों के साथ इतना गहरा रिश्ता बन जाएगा ये कभी सोच नहीं सकती थी। उधर गाँव के घर में पैसी और पैथर का भी बुरा हाल था। उनके ट्रेनर की शिकायतें अगले ही दिन से शुरू हो चुकी थी। माँ भी उनको सम्भाल नहीं पा रहीं थी। फोन पर जब वे मेरी आवाज़ सुनते तो कभी ऊँची आवाज़ में अपनी नाराजगी आवाज़ जताते और कभी धीमा कर कूँ-कूँ से प्यार का इजहार भी करते। अब हर रोज सुबह-शाम फोन पर उससे बातें करती और माँ से उनका हाल पूछती। दोनों ने जल्द ही समझदारी दिखाते हुए इस नई परिसमिति परिस्थिति को अपना लिया। वे माँ के सबसे बड़े रक्षक एवं मददगार बन गए। उनको ट्रेनिंग भी अच्छी चल रही थी और उन्होंने कई तरीके से माँ की मदद करने की कला सीख ली जैसे सुबह-सुबह गेट से अखबार माँ के बिस्तर पर पहुँच जाना। माँ अगर अपना चश्मा खोल कर कहीं रखकर भूल जाती तो दोनों उसे ढूँढ निकालते। उनकी तस्वीर घर के मेन गेट पर लग जाने से सभी राहगीर बड़ी सावधानी के साथ वहाँ से पार होते। अंदर आने की हिम्मत कम ही लोग जुटा पाते। अब बगीचे से फल और फूल गायब नहीं होते। दोनों दिन-रात चौकीदारी करते। नतीजा ये हुआ कि सालों बाद माँ के फूल का बगीचा बहुत ही खूबसूरती के साथ खिल उठा। माँ किचन का काम कर रही हो या बागवानी दोनों हर वक्त उनके साथ होते। पिताजी से भी उनकी अच्छी बनती थी। पर ज्यादातर वक्त वे माँ के साथ ही बिताते। हम सभी को ऐसा लगता कि हमसे ज्यादा माँ की देखभाल पैसी और पैथर ही करते हैं। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं होता जब बीच-बीच में छुट्टी लेकर मैं उनसे मिलने जाया करती थी। मुझे देखते ही दोनों मुझ पर कूद पड़ते और मुझे ज़मीन पर गिरा देते। काफी मशक्कत के बाद उठकर अंदर जा पाती। उन्हें मेरे साथ बाजार जाना बहुत पसंद था। उनको घर के बाहर घूमने का मौका मेरे साथ ही मिलता।

कुछ दिनों के बाद मेरी शादी तय हो गई और गई जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गई लेकिन समय-समय पर अपने प्यारे दोस्तों से मिलने जाने का मौका मैं ढूँढ ही लेती। कभी-कभी उदास होती और अपने मन की बातें किसी से बता नहीं पाती तो उनके सामने अपना सारा दर्द उड़ेल देती। वे बहुत ही शांत एवं प्यार भरी नजरों से मेरी ओर देखते जैसे कह रहे हों सब ठीक हो जाएगा। जब पहली बार माँ बनने वाली थी और मैं अपने मायके में रहने गई तो पैसी एवं पैथर का ज्यादातर वक्त मेरे साथ ही बीतता। सुबह शाम मेरे साथ वॉक पर जाते। मेरे साथ ही खाना खाते। मेरे पास ही आराम करते। घर पर नए सदस्य के आने की जितनी खुशी हमें थी उतनी पैसी और पैथर को भी थी। बेटी के आने से पैसी और पैथर जैसे अचानक बड़े बच्चे बन गए थे। उन्हें बेटी की सुरक्षा की सुरक्षा की बहुत फिक्र रहती थी। दोनों चौकीदारी में ही लगे रहते। किसी को बेटी के पास भी नहीं आने देते। कोई मेहमान यदि उसे गोद लेना चाहता तो पहले मुझे दोनों को समझाना होता। इसी तरह जिंदगी के हर खुशी एवं गम में मुझे अपने दोनों खास दोस्त पैसी एवं पैथर का साथ मिला। उनकी कमी तो हमेशा रहेगी पर उनकी यादें हमेशा मेरे साथ हैं और रहेंगी।



## महीनों का नामकरण

शशिकान्त कुमार, लेखाकार

जनवरी माह रोमन देवता जेनस के नाम पर पहले महीने का नामकरण हुआ। यह माना जाता है कि जेनस देवता के दो चेहरे हैं। एक से वह आगे देखता है और दूसरे से पीछे। इसी तरह जनवरी भी एक चेहरे से बीते वर्ष को देखती है और दूसरे से आगामी वर्ष को। जेनस को लैटिन भाषा में जैनअरिस कहा जाता है बाद में जेनुअरी बना, जिसे हम हिन्दी में जनवरी कहते हैं। इसी माह से रोमन वर्ष की शुरुआत भी होती है।

फरवरी माह का संबंध लैटिन भाषा के फ़ेबरा से है, जिसका अर्थ है शुद्धि की दावत। फरवरी अर्थात् फ़ेब्रुअरिस पहले इसी माह की 15 तारीख को लोग शुद्धि दावत कहते थे। कुछ लोग रोमन देवी फ़ेब्रुएरिया से भी इसे जोड़ते हैं जो कि संतानोत्पत्ति (संतान की उत्पत्ति) की देवी है। इसलिए महिलाएँ इस महीने इस देवी की पूजा करती हैं ताकि वे प्रसन्न होकर उन्हें संतान होने का आशीर्वाद दे सकें।

मार्च महीने का नामकरण रोमन के देवता मार्स के नाम पर हुआ। वर्ष का शुभारंभ इसी महीने से होता है। मार्स, मार्टिअस का अपभ्रंश है जो आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वर्ष के महीनों में सर्दियों के दो महीनों को नहीं गिना जाता था क्योंकि इनमें खेती-बारी का काम मंद होता था। इसलिए मार्च का नाम युद्ध के देवता मार्स यानि मंगल देवता के नाम पर रखा गया है। सर्दियाँ खत्म होते ही लोग दूसरे देशों पर आक्रमण करते थे, यही वह कारण था कि इसी मार्स के नाम पर मार्च कहा जाने लगा।

अप्रैल महीने की उत्पत्ति लैटिन के शब्द एस्पेशयर से हुई है। इसका अर्थ है खुलना। रोम में इसी माह कलियाँ खिलकर फूल बनती थीं अर्थात् बसंत ऋतु का आगमन होता था। इसलिए प्रारंभ में इस माह का नाम एप्रिलिस रखा गया। इसके पश्चात वर्ष के केवल दस माह होने के कारण यह वसंत से काफी दूर होता चला गया। वैज्ञानिकों में पृथ्वी के सही भ्रमण की जानकारी से दुनिया को अवगत कराया। कालांतर में यही अप्रैल हो गया।

मई रोमन के देवता मरकरी की माता मइया के नाम पर मई नामकरण हुआ। इन्हें विकास और समृद्धि से संबन्धित माना जाता है। इसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द मेजोरस से हुई जिसका अर्थ बड़े-बुजुर्ग या रईस होता है। रोम में मान्यता थी कि बुजुर्गों के अनुभव व उनके बताएँ रास्ते पर चलने से समृद्धि और विकास होना सुनिश्चित है। इसकी प्रतीक मइया मानी जाती है और लोग उनकी पूजा इसी भाव से करते हैं। इसलिए मइया के नाम पर मई माह का नामकरण हुआ।

जून इस महीने में अक्सर लोग शादी कर घर बसाते थे। इसलिए परिवार के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द जेन्स के आधार पर इसका नाम जून रखा गया। एक अन्य मान्यता है कि जिस प्रकार हमारे यहां इंद्र को देवताओं का स्वामी (राजा) माना गया है। उसी प्रकार रोम में भी सबसे

बड़े देवता जीयस है एवं उनकी पत्नी का नाम जूनो है। इसी देवी जूनो के नाम पर जून महीने का नामकरण हुआ। जून नाम रोम के पारिवारिक नाम जूनियस के आधार रखा गया है।

जुलाई माह का नाम जुलियस सीजर के शुभमान में मार्क एंटनी द्वारा 44 ई. पू. में किया गया था। इसके पहले जुलाई का नाम क्विंटिलियस' था जो कि क्विंटस' शब्द से जन्मा था जिसका अर्थ पाँच होता है। जुलाई रोमन कैलेंडर में पाँचवा महीना' हुआ करता था। बाद में जब कैलेन्डर दस से बारह महीनों का हुआ तो मार्च तथा अप्रैल दो माह जुड़े तो यह सातवाँ महीना बन गया।

अगस्त महीने का नाम जूलियस सीजर के भतीजे एवं महान सम्राट अगस्टस सीजर के नाम को अमर बनाने के लिए छठवें माह सेक्सटिलिस का नाम बदल कर अगस्तस कर दिया गया। जो कालांतर में अगस्त हो गया। इस महीने का नाम अगस्तस राजा के सम्मान में 8 ई.पू. में रखा गया था। अगस्तस ने अपने चाचा जूलियस सीजर के सम्मान में जो महान कार्य किए थे, उनमें से अधिकांश इसी माह किए गए थे। शसलिए इस माह का नाम अगस्त पड़ा।

सितम्बर रोम में को सैप्टेंबर कहा जाता था। सेप्टे का अर्थ होता है सात और बार का अर्थ होता है वां। इस प्रकार सैप्टेंबर अर्थात कैलेन्डर में सातवें स्थान पर आने वाला महीना। हालांकि जब कैलेन्डर में मार्च और अप्रैल दो माह और जुड़ गए तो यह नौवां महीना बन गया। इसके पीछे किसी देवता एवं किवंदती (मान्यता) का उल्लेख नहीं मिलता है। हालांकि कैलेन्डर में माह का स्थान सातवें से नौवां हो गया।

अक्टूबर माह के नाम की उत्पत्ति आक्टो शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है आठ। पहले यह माह रोमन कैलेन्डर में आठवें नम्बर पर हुआ करता था। बाद में दो माह मार्च एवं अप्रैल जुड़ने तथा कैलेन्डर में दसवाँ माह बनने के बावजूद यह नाम इतना प्रचलित था कि उसमें बदलाव नहीं किया गया। रोमन सेनापति जर्मेनिकस सीजर ने अपने नाम के आधार पर जर्मेनिकस करने का काफी प्रयास किया पर इस माह का नाम अपने नाम पर न कर सका।

नवम्बर महीने को नैटिन में पहले नोवेम्बर यानी नौवां माह कहा गया था। ग्यारहवाँ महीना बनने पर इसका नाम नहीं बदला एवं इसे नोवेम्बर से नवंबर कहा जाने लगा। इसके नाम की उत्पत्ति नोवेज शब्द से हुई है जिसका अर्थ नौ होता है। नौवेम, रोमन गिनती में नौवें स्थान के लिए प्रयोग किया जाता है। इसे पहले अंग्रेजी में रक्त-मज्जा या बलिदान का महीना कहा जाता था।

दिसम्बर महीना लैटिन शब्द डैसेम यानी इस के आधार पर इसे दिसम्बर कहा गया। वर्ष का 12 माह बनने पर ही इसका नाम नहीं बदला। इसके नाम की उत्पत्ति डैसेम या डेकम शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ दस होता है। प्रसिद्ध रोमन सम्राट लूसियस अपनी पत्नी के नाम पर इसे अमाजोनियस' करना चाहते थे परन्तु तत्कालीन सीनेट ने प्रस्ताव को मंजूरी नहीं दी। पहले अंग्रेजी में इस माह को दिसम्बर अर्थात मध्य-शीत मास या शीत मास अर्थात सीतलहर कहा जाता था। इस तरह इस माह का नाम दिसम्बर पड़ा।

## जीवन का लक्ष्य

अमित कुमार साह, व.लेखाकार

इस आधुनिक समाज में जहाँ मानव का जीवन व्यस्त हो चुका है तथा मानव अपने अधिकांश समय को एक सीमित मात्र तक रखा है। आज के इस समाज में मनुष्य का अगर लक्ष्य देखा जाए तो शहर में घर बनाना, शादी करना, सुविधाएँ खरीदना, नौकरी करना तथा अपने परिवार के साथ शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना, यही रह गया है पर क्या ये लक्ष्य जीवन के उस लक्ष्य को पूरा करते हैं जिसके लिए मानव जीवन का जन्म हुआ है। हिन्दू धर्म की मान्यता है कि मानव शरीर का जन्म इस पृथ्वी में कई जन्मों के बाद मिलता है जिसमें उसके कर्मों के फल को श्रेष्ठ माना जाता है। भगवान कृष्ण ने श्रीमद् भगवद् गीता में कहा है कि मनुष्य को अपने जीवन के लक्ष्य को अपने अच्छे कर्म करते हुए प्राप्त करना चाहिए। अच्छे कर्म से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है अतः मनुष्यों को अपने लक्ष्यों को पूरा करते हुए उनके लक्ष्यों को भी स्वीकार करना चाहिए जिससे देश एवं समाज का कल्याण हो।



जीवन का लक्ष्य किसी भी व्यक्ति के लिए एक सीमित पात्र नहीं होनी चाहिए। अगर इंसान परिवार तक ही अपने लक्ष्यों को सीमित रखता है तो कभी भी उस समाज व देश का कल्याण नहीं होता है जहाँ वे निवास करते हैं। अगर किसी व्यक्ति के अंदर ज्यादा धन कमाने की लालसा है और वह अपने उस लक्ष्य को प्राप्त भी कर लेता है तो इससे उसके जीवन के लक्ष्य पूर्ति नहीं होती है। जब इस धन का उपयोग अच्छे कार्यों एवं समाजरहित में हो तब जीवन के लक्ष्य की पूर्ति मानी जाती है। इस 'लक्ष्य' शब्द का अगर हम उदाहरण देशहित में देखे तो कई वीर पुरुषों ने देश को आजाद करने में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा की हैं। वे लोगों ने अपने जीवन का उद्देश्य एक मात्र देश को स्वतंत्र करना माना जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज हम एक स्वतंत्र देश में अपना जीवन बसर कर रहे हैं। इसी प्रकार इस देश के कई लोगों ने अपने जीवन के लक्ष्यों को समर्पित कर दिए ताकि आगे आगामी पीढ़ी अच्छा जीवन यापन कर सके और समाज का सर्वांगीण विकास हो।



## समाज में नारी का स्थान

आर शांति, व. लेखा अधिकारी

महिलाएँ परिवार बनाती हैं, परिवार घर बनाता हैं, घर समाज बनाता हैं और समाज ही देश बनाता है। नारी पूरी जिंदगी बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास और दादी जैसे रिश्तों को ईमानदारी से निभाती हैं। इन सभी रिश्तों को निभाने के बाद भी वह पूरी शक्ति से नौकरी करती है ताकि अपना परिवार का, और देश का भविष्य उज्जवल बना सके। आदर्श महिला वह हैं, जो शांत आचरण और पहनावे वाली, स्वस्थ शरीर, स्वस्थ दिमाग वाली है।



आदर्श महिला दुनिया में अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम किरदार निभाती है। भारत को लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएँ करती हैं। यदि महिलाएँ ही पढ़ी लिखी नहीं होगी तो देश कभी प्रगति नहीं कर पाएगा। कोई कवि ने सही कहा- जिस घर में औरतों की इज्जत होती है, उस घर में लक्ष्मी जी की पूजा अपने आप हो जाती है। डा. भीमराव अंबेडकर ने कहा- मैं किसी समुदाय की प्रगति उस समुदाय की महिलाओं की प्रगति से मापता हूँ। सच में महिलाएँ समाज की सच्ची शिल्पकार होती हैं।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम ,उ.प्र., प्रयागराज**

उपर्युक्त विषयक आपके पत्रांक हिन्दी कक्ष/अमृत रिव्यू/2023-24/ दिनांक 18.04.2023 द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका “अमृत” के 31वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री एन. दिनकरन का लेख “भूमंडलीय उष्णता : एक गंभीर चुनौती”, सुश्री जूलियट विमला का यात्रा वृत्तांत “सपना जो सच हुआ”, सुश्री मंजु मोनिषा डी. का लेख “आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही”, श्री संतोष कुमार की कहानी “एक नया एहसास”, एवं श्री एम. रामास्वामी की कविता माँ, “तुम याद आती हो माँ”, आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। कार्यालय परिवार पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

हिन्दी अधिकारी

**कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, प्रयावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा-700020**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ‘अमृत’ के 31वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ‘अमृत’ राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय कर्मियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्री एन. दिनकरन का आलेख ‘भूमंडलीय उष्णता-एक गंभीर चुनौती’, सुश्री जूलियट विमला बी. की कहानी ‘सपना जो सच हुआ’, श्री सशिकांत कुमार का आलेख ‘बिहार एक परिचय’, सुश्री दीपा सिंह का आलेख ‘प्रयावरण प्रदूषण को कम करने के उपाय’, सुश्री आर. चित्रा की कविता ‘राह’ और श्री एम. रामासामी की कविता ‘तुम याद आती हो माँ’, अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं। हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका ‘अमृत’ के उज्ज्वल भविष्य के लिए ‘आकांक्षा’ परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

**कार्यालय महालेखाकार (लेखा व अधिकारी) पंजाब एवं यू.टी., सैक्टर-17-ई चंडीगढ़-160017**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ‘अमृत’ के 31वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। सुश्री सी. अनुराधा की ‘धरती को बचाओ’, सुश्री आर. शांति की ‘शिक्षक’, श्री अमित कुमार साह की ‘ज़िम्मेदारी’, ‘श्री अनिल कुमार की ‘बेरोजगार की व्यथा’, श्री अमित कुमार साह की ‘बिहार की बाढ़’ रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी

### **प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार पटना**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। राजभाषा हिन्दी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका 'अमृत' का 31वां अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के धरातल पर बोया गया वो बीज है जो कार्मिकों के सहयोग से निश्चित रूप से पुष्पित और पल्लवित होगा। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल उच्चकोटी की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है। आशा ही नहीं अपितु मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के साथ-साथ कार्यालय में हिन्दी कि मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

### **कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार) हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003**

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय में मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

### **कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग-793001**

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका-'अमृत' के 31वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को सहृदय बधाई है। विशेषकर "भूमंडलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती" नामक लेख हमारी धरा को स्वस्थ बनाए रखने हेतु जनमानस को जागरूक करने की एक पहल है। 'महालेखाकार के लेखा और लेखाचक्र' भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखाविभाग में प्रदेश स्तर पर कार्यालय द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया को दर्शाता है। साथ ही 'धरती को बचाओ', 'रामकथा सुरधनु सम' एवं बेहतर कल के लिए आज ही बचाएँ जैसे लेख ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं प्रशंसनीय हैं। आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अमृत' के अग्रिम संस्करण हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी

### **कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), असम**

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार) तमिलनाडु, चेन्नई द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका 'अमृत' के 31वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

हिन्दी अधिकारी

### प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार पटना-800 001

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका अमृत का 31वां अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण, आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। मंजू मोनिषा डी. द्वारा दो गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी रानी वेलुनचियार तथा श्री कुमारसामी (तिरुपुर कुमारन) के ऊपर लिखा लेख "आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही" काफी प्रभावशाली है। श्री वे. राजू का आयकर नियमों, टेक्स बेनीफिट्स और बचत जैसे विषयों के ऊपर लिखा श्रृंखला लेख बेहतर कल के लिए आज ही बचाएँ ज्ञानवर्धक है। श्री संतोष कुमार की कहानी 'एक नया अहसास, श्री अनिल कुमार तथा श्री एम. रामास्वामी की कविता क्रमशः बेरोजगार की व्यथा' और तुम याद आती हो माँ प्रशंसनीय है। दुबई यात्रा पर लिखा गया जूलिएट विमला डी. का अपने माता-पिता के साथ का यात्रा वृत्तान्त सपना जो सच हुआ रोचक है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो ऐसी कामना है- वरिष्ठ लेखा अधिकारी

### प्रधान महालेखाकार (ले. ह.) हरियाणा का कार्यालय, चंडीगढ़-160020

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 06.03.2023 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री एन. दिनकरन का लेख 'भूमंडलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती', सुश्री अनुराधा का लेख 'धरती को बचाओ', सुश्री मंजू मोनिषा का लेख 'आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही' श्री संतोष कुमार का लेख 'एक नया अहसास' एवं श्री सुभाष चंद यादव का लेख 'रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त सुश्री वृंदा सुंदर की कविता गीता का सार सुश्री आर चित्रा की कविता 'अपनी-अपनी राह एवं श्री अनिल कुमार की कविता 'बेरोजगार की व्यथा' पठनीय है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ- हिन्दी अधिकारी

### कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-11), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "अमृत" के 31वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी, वो हैं- सपना जो सच हुआ, तुम याद आती हो मां, गीता सार एवं बेरोजगार की व्यथा आदि। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएँ-  
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

### भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग पूर्वोत्तर सीमा रेल, मालिगाँव गुवाहाटी

आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका का बाह्य आवरण सुंदर व आकर्षक है। विशेष रूप से श्री पी.गणेश, लेखाकार द्वारा संकलित 'बच्चों पर इंटरनेट का प्रभाव', श्री सुभाष चन्द यादव, हिन्दी अधिकारी का लेख 'रामकथा सुरधेनु सम अत्यंत हृदयस्पर्शी हैं। पत्रिका में वे.राजू सहायक लेखा अधिकारी का लेख 'कार्यालय में हिन्दी कार्यों को बढ़ावा देने के उपाय' अत्यंत ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ- व.लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



### **कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. ह.) हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003**

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 31 वे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय में मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ- वरिष्ठ लेखा अधिकारी

### **कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा-॥), महाराष्ट्र नागपुर 440001**

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अमृत" के 31वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री आर शांति व लेखा अधिकारी का लेख "शिक्षक", श्री अमित कुमार साह, व. लेखाकार का लेख जिम्मेदारी तथा श्री शिवजी पांडेय, लेखाकार का लेख "बिहार की बाढ़" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ- हिंदी अधिकारी

### **कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदार) राजस्थान**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका अमृत के 31वें अंक की प्राप्ति हुई है अतः आपको बहुत-बहुत साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएँ राजभाषा के सम्बंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार-प्रसार हेतु बनाये गए विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी एवं सहायक हैं। पत्रिका में सम्मिलित श्री सुभाष चंद यादव का लेख 'रामचरितमानसः भारतीय दर्शन की अनमोल निधि', सुश्री मंजू मोनिसा डी का लेख "आजादी की लड़ाई में गुमनाम सिपाही" तथा श्री एम.रामास्वामी की "तुम याद आती हो माँ" नामक कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ- प्रभारी अधिकारी, राजभाषा

### **कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़**

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका अमृत के 31वें अंक की एक ई- प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी

### **महालेखाकार (लेखापरीक्षा -1) का कार्यालय, ओडिशा, भुवनेश्वर**

कार्यालय की पत्रिका "अमृत" के 31 वे अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की विषय वस्तु रोचक है। पत्रिका का मुख एवं अंतिम पृष्ठ मनमोहक है। पत्रिका के समस्त पृष्ठ गुणवत्ता धारण किए हुए हैं। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री एन. दिनकरन का लेख 'भूमंडलीकरण उष्णता: एक गंभीर चुनौती', श्री एम. रामास्वामी की कविता 'तुम याद आती हो माँ' श्री अजय नाथ त्रिपाठी का लेख 'आजादी के 75 साल' अत्यंत सराहनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और भी मनमोहक बनाते हैं। पत्रिका की प्रगति की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

व.लेखापरीक्षा अधिकारी

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) पश्चिम बंगाल, कोलकाता 700001**

पत्र क्रमांक हिन्दी कक्ष/अमृत रिव्यू/2022-23/ दिनांक 06.03.2023 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "अमृत" के 31वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय हैं। आपका कार्यालय 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद सभी रचनाकारों द्वारा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सहभागिता अत्यंत सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

**कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट**

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "अमृत" के 31 वें संस्करण की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में श्री एन दिनकरन, व. उपमहालेखाकार की रचना 'भूमंडलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती', श्री सुभाष चंद्र यादव की रचना 'राम चरित मानस भारतीय दर्शन की अनमोल निधि' श्री आर. विश्वनाथन की रचना महालेखाकार के लेखा और लेखा चक्र, सुश्री अनुराधा की रचना 'धरती को बचाओ', श्री पी. गणेश की रचना "बच्चों पर इंटरनेट का प्रभाव" सुश्री मंजू मोनिषा डी. की रचना 'आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही', श्री शिवजी पाण्डेय की रचना "बिहार की बाढ़" आदि रचनाएँ विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका में कार्यालयी झलकिया पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ - व.लेखा अधिकारी/हिंदी

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160020**

ई-मेल द्वारा दिनांक 06.03.2023 को आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक की ई-प्रति प्रति प्राप्त हुई है। रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि', 'आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही' पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के उपाय', तुम याद आती हो माँ', 'खुद को बिखरने मत देना' एवं 'हिन्दी दिवस का राष्ट्रीय आयोजन' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं- हिंदी अधिकारी

**प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार) का कार्यालय, असम, गुवाहाटी-781029**

आपके कार्यालय की राजभाषा हिन्दी पत्रिका "अमृत" के 31वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सरहनीय है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री सुभाष चंद्र यादव, हिन्दी अधिकारी का लेख "रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि", श्री पी.गणेश का लेख "खुद को बिखरने मत देना" प्रशंसनीय है। रचनाकारों एवं संपादक को हार्दिक शुभकामनाएँ- हिन्दी अधिकारी

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार)-2, महाराष्ट्र नागपुर-440001**

इस कार्यालय में आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह का हिन्दी पत्रिका "अमृत" का 31वां अंक प्राप्त हुआ है तदहेतु हृदय से साधुवाद। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कवितायें सरस, पठनीय एवं शिक्षाप्रद हैं विशेषतः वरिष्ठ उपलेखाकार श्री एन.दिनकरन की रचना "भूमंडलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती", हिन्दी अधिकारी श्री सुभाष चन्द्र यादव की रचना "रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि", वे.राजू, सहायक लेखा अधिकारी का लेख "कार्यालया में हिन्दी कार्यो को बढ़ावा देने के उपाय", दीपा सिंह की रचना "पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के उपाय" आदि। इनके अलावा अन्य रचनाओं की महत्ता भी कम नहीं है तथापि सभी का उल्लेख करना संभव नहीं है। पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक बदलाव होंगे एवं हिन्दी अपनी ऊँचाई को छूएगी ऐसी आशा परिलक्षित हो रहे हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई- हिंदी अधिकारी





हिन्दी पत्रिका अमृत अंक 31 का विमोचन करते हुए अधिकारीगण



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में उपस्थित हिन्दी परिवार





हिन्दी पत्रिका अमृत अंक 31 का लोकार्पण करते हुए अधिकारीगण



हिन्दी पखवाडा 2022 के समापन समारोह को संबोधित करते हिन्दी अधिकारी